

श्रीशिवस्तोत्रम्

श्रीरामस्तोत्रम्



एवं

श्रीहनुमत्स्तोत्रञ्च

(हिन्दीभाषानुवादसहितम्)



श्रीपण्डितशिवदत्तशास्त्रिणाविरचितम्

मूल्यमस्यप्रेम्णाध्ययनम्

श्रीशिवस्तोत्रम्-श्रीरामस्तोत्रम्-श्रीहनुमत्स्तोत्रञ्च

(हिन्दीभाषानुवादसहितम्)



इटावामण्डलान्तर्गतसलेमपुरग्रामवास्तव्यविद्वत्सार्व-
भौमश्रीपं०श्यामलालशर्मतनुजनुषा-
श्रीपण्डितशिवदत्तशास्त्रिणाविरचितम्

स्तोत्ररचयिता—श्री पं० शिवदत्त शास्त्री व्या०आ०आ०
कर्मकाण्ड विशारद।
ग्राम—सलेमपुर
पो०—अछल्दा
जि०—इटावा (उ०प्र०)

प्रकाशक— सूरज प्रसाद गुप्त—बहीवाले
फर्म—रामशङ्कर बही वाले
पुराना जनरलगंज कानपुर—१
फोन नं० ६५५०२

प्रथमावृत्ति— भाद्रसुदि नवमी मङ्गलवार सं० २०२४
द्वितीयावृत्ति—सं० २०३३

प्रथमावृत्ति में (२०००) द्वितीयावृत्ति में (१०००)
मूल्य—सप्रेमस्तोत्र पढ़ना।

मुद्रक—एलोरा प्रिंटर्स, सूटर गंज कानपुर—१ (फोन—४०५२७)

भूमिका

संसार का प्रत्येक मानव, अपने सर्वाङ्गीण विकास की, आन्तरिक कामना रखकर ऐहिक, भौतिक साधनों से विफल होकर, आसुतोष तथा आशु सिद्ध प्रद देवता के अन्वेषण में आराध्य, अनन्त, देवताओं की आराधना करता हुआ भी सफल नहीं हो पा रहा है। और हताश हो रहा है।

यह देखकर मैंने इस उद्देश्य की शीघ्र पूर्ति होने के लिए श्रद्धेय श्री मान् पं० शिवदत्त शास्त्री ज्योतिवित् व्या० आ० आ० कर्म काण्ड विशारद पौराणिक स्थान, सलेमपुर, पत्रालय, अछल्दा मण्डल-इटावा, (उ०प्र०) निवासी से प्रार्थना की, उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार करके, आशुतोष, भक्त वत्सल दयालु श्री शिव जी, के स्तोत्र की रचना कर, भाषानुवाद करके तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के परम भक्त, भक्त शिरोमणि अभीष्ट पदार्थ एवं सिद्धि देने वाले सकल संकट मोचन अञ्जना नन्दन, मनोवेग वायुपुत्र श्री हनुमान् जी के स्तोत्र की रचना कर भाषानुवाद करके मुझे दिया।

इस स्तोत्र में महावीर संकट मोचन श्री हनुमान् जी की समग्र लोक हित कारणी भक्त जनोद्धार कारणी, लीलाओं का संस्मरण करते हुए उनकी अभिवदंना की है। जो श्री हनुमान जी आज भारत के ही नहीं अपितु आथावान् समग्र विश्व के लिए प्रेरणा, श्रद्धा, आत्म विश्वास वीरता, ब्रह्मचर्य जीवन तथा सेवक के चूडान्त निदर्शन के रूप में आदर्श हैं। वे आशुतोष शिव के ही द्वितीय स्वरूप है। उनकी आराधना तथा उनके महान् कार्यों का अनुसरण इस राष्ट्र को अनन्त शक्ति यशो-वैभव एवम् चारित्रिक वल से परिपूर्ण बना सकेगा। इसमें सन्देह नहीं।

त्रेता युग में जिन्होंने भगवान् राम की सेवा, महावीर के रूप में की आज कलियुग में जो अनेकों स्थानों पर विभिन्न रूपों में निवास करते हुए

आराधक भक्त जनों के संकटों का निवारण कर रहे है। अभीष्ट पदार्थ अनन्त शक्ति, और अभिनव, प्रेरणा, विपुल, उत्साह आदि भावों को भक्तों के हृदयों में जागृति करते रहते है। संसार में कौन ऐसा है जो कि पराक्रम उत्साह-बुद्धि प्राप्त, सुशीलता, मधुरता, नीति अनीत के विवेक, गम्भीरता चतुरता, उत्तमबल, और धैर्य में श्री हनुमान् जी से बढ़ कर हो। उन आराध्य देव के समक्ष भक्त किन शब्दों में हार्दिक मनोभाव अभिव्यक्त करे। इस आवश्यकता की पूर्ति इस स्तोत्र से अवश्य हो सकेगी।

श्री महावीर जी के उन सभी स्वरूपों का विशेष कर बाल रूपों की वन्दना अति तन्मयता से की गई है। कलियुग में विश्ववन्द्य श्री हनुमान् जी की बालरुप की उपासना एवं भक्ति अति शीघ्र सभी बाधायें दूर करने वाली है। असम्भव कार्य शीघ्र सिद्ध हो जाते हैं। श्री महावीर जी बाल रूप से भारत में अनेक स्थानों में निवास करते हुए भक्तों के संकट जाल को शीघ्रता से हरण कर रहे हैं।

विशेष क्या-विद्वान् भक्त एवम् ईश्वरानुरागी, सज्जनों के हाथ में यह स्तोत्र समर्पित है। वे ही इसकी उपियोगिता यथा उत्कृष्टता का निर्णय कर कर सकेंगे।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस स्तोत्र द्वारा पूर्ण अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर स्तोत्र रचयिता एवं प्रकाशक के परिश्रम को सफल बनावेंगे तथा मानवता सुलभ त्रुटियों की सूचना देंगे। जिससे उनका द्वितीय संस्करण में संशोधन हो सके। परिशिष्ट विषय भी स्तोत्र रचयिता से ही पूर्ण प्राप्त हुये थे। उममें कुछ प्रकाशित किये गये हैं।

प्रकाशक

सूरज प्रसाद गुप्त

सङ्केत–श्री रामशङ्कर जी बही वाले

पुराना जनरलगंज कानपुर–१

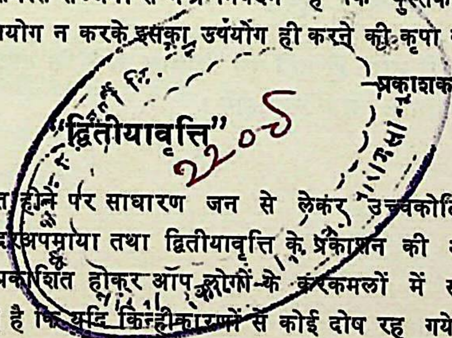
फोन नं० ६५५०२



अपनी बात

चिर काल से इस प्रकार की एक पुस्तक प्रकाशित करने की मेरी उत्कट इच्छा थी जो आज अतिकाल के वाद जगन्नियन्ता जगदीश्वर की अपार करुणा से पूरी हुई—प्रकाशित होकर पुस्तक आपके कर कमलों में समर्पित है—श्रीमान् परमआदरणीय पूज्य १०८ श्री गुरुदेव जी की प्रकाशित अन्य सभी पुस्तकों की तरह यह पुस्क भी सर्व साधारण प्रेमीजन तक पहुँच सके यही मेरी प्रबल इच्छा है। अतः इसका भी विरण बिना मूल्य ही निश्चित किया गया है समस्त सज्जनों से नम्र निवेदन है कि पुस्तक को निःशुल्क समझ कर दुरुपयोग न करके इसका उपयोग ही करने की कृपा करें।

—प्रकाशक



"द्वितीयावृत्ति"

प्रथमावृति प्रकाशित होने पर साधारण जन से लेकर उच्चकोटि के विद्वत्समूह आदि ने सादर अपनाया तथा द्वितीयावृत्ति के प्रकाशन की आज्ञा प्रदान की द्वितीयावृत्ति प्रकाशित होकर आप लोगों के करकमलों में सादर समर्पित है। निवेदन यह है कि यदि किन्हीकारणों से कोई दोष रह गये हों तो अवश्य सूचित करने की कृपा करें।

पुस्तक की उपयोगिता को देखकर व प्रिय पाठको की अधिक मांग पर मुझे इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण छपाना पड़ा। इस प्रोत्साहन से मुझे मेरे मित्रों व सहयोगियों को हार्दिक प्रसन्नता है हम सव पुस्तक प्रेमियों व पाठकों के हृदय से आभारी हैं।

परम पूज्य पं. शिवदत्त जी शास्त्री (पुस्तक रचयिता) से जव प्रकाशक ने इस पुस्तक पुनः प्रकाशन का निवेदन किया तो पंण्डित जी ने अवर्णनीय कृपा कर भगवान श्री राम के स्तोत्र की रचना कर इस पुस्तक के कलेवर में चार चांद और लगा कर साधारण जनता व पाठक समुदाय को एक नया मार्गदर्शन दिया। हम सव, महान विद्वान पण्डित जी की इस पावन कृपा के के आजन्म ऋणी रहेंगे।

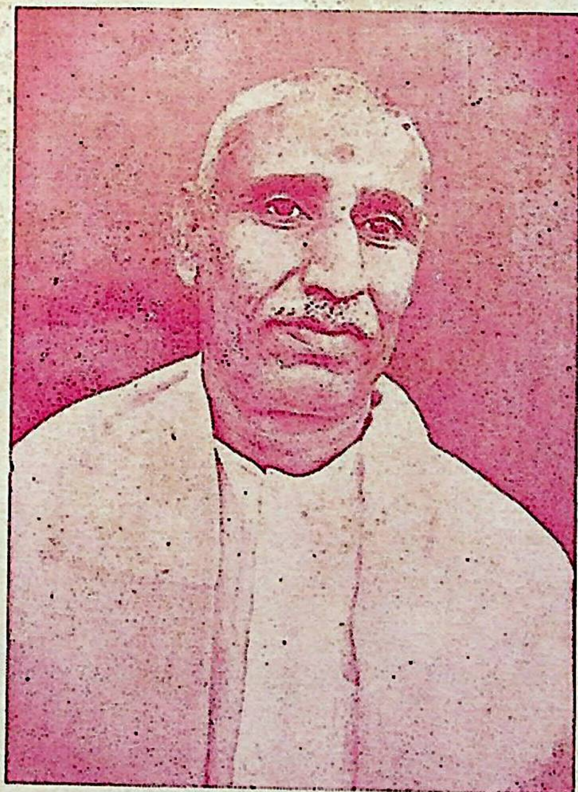
हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि पाठक गण पुस्तक में नवीन परिवर्द्धन से लाभान्वित होंगे।

—प्रकाशक

————

विषय–सूची

॥ श्री मद्गुरवेनमः ॥



श्री शिवस्तोत्र व श्री हनुमत्स्तोत्र आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता-ग्रन्थलेखक-प्रवक्ता-ज्यौतिष-व्याकरण-तन्त्र-साहित्य-धर्मशास्त्र आदि के सुयोग्य विद्वान्-परमपूज्य गुरुदेव श्रद्धेय-प्रातःस्मणरीय श्रीमान् १०८ श्री पं० शिवदत्त जी शास्त्री ।



"रामशङ्कर वही वाले" फर्म संस्थापक–परमपूजनीय–परमादरीय – श्रद्धेय–प्रातःस्मरणीय–सर्वतीर्थमय–सर्वदेवमय–दयालु १०८ श्री ब्रह्मलीन पिता श्रीरामशङ्करजी। आपकी ही परम पावन पुण्य स्मृति में यह पुस्तिका प्रकाशित की गई।

पुत्र–सूरजप्रसाद

ॐ श्री शिवाय नमः



हे शोकमोचन ! दयार्णव ! विश्वनाथ–
गौरीपते ! भुजगभूषण ! दीननाथ।
शम्भो ! महेश्वर! सुरार्चित ! देवदेव !–
त्वाञ्चिन्तयामि गिरिजासहितंसदैव ॥



शिवस्तुतिः



ॐ शिवायनमः

श्लोक—१

विधिर्भूत्वा सृष्टिं सकल जगतस्त्वम्प्रकुरुषे
हरिर्लोकान् सर्वानवसि करुणासिन्धुरनिशम् ।
मृड त्वं संसारं हरसि भगवन् नाशसमये,
भजेत्वाम्भूतेशं सकल भुवनेशम्पशुपतिम् ॥

× × ×

अर्थ—१

जो व्रह्मा बनकर समस्त संसार की स्टष्टि करता है-विष्णु बनकर संसार की रक्षा करता है-शंकर बनकर मंसार का नाश करता है-उस सम्पूर्ण भुवनों के स्वामी-समस्त भूतों के स्वामी पशुपति-भगवान्-शिव का मैं भजन करता हूँ ।

× × ×

श्लोक—२

भजन्त्येकेधीरा जगतिवहुरूप सुरवरं,
यमेकेध्यायन्ति स्वहृदिपरमानन्द ममलम् ।
उमाकान्तंशान्तञ्जनहृदि विभान्तं सकरुणम्,
भजेतङ्गौरीशं सुरपतिहरीशं शरणदम् ॥

× × ×

अर्थ–२

जिस शंकर को लोग अपने हृदय में परमानन्द स्वरूप-मानकर ध्यान करते हैं, कुछ उपासक अनेक अनेक रूपों में भजन करते हैं- उसी उमाधीश्वर शान्त सकलजनों के हृदय में निवास करने वाले दयावान्-रक्षक-सुरेश्वर-भगवान् शिवजी का मैं भजन करता हूँ।

श्लोक–३

गुरुर्माता भ्राता सुहृदपि सखा पूज्य जनकः,
सहायो मे सर्वः सकल परिवारः प्रियजनः ।
त्वमेवान्यो लोके नहिशरणदाता पशुपते,
शिव त्वां वन्देऽहं सकलजनकामेश मनिशम् ॥

× × ×

अर्थ–३

हे दयालु शंकर जी संसार में-गुरु-माता-पिता-बन्धु-मित्र-सहायक आदि जो भी हैं सब आप ही हैं और कोई नहीं है । ऐसे दीनों के रक्षक संसार के ईश भवानीपति, विश्वम्भर आपकी मैं सदा स्तुति करता हूँ ।

× × ×

श्लोक–४

नयावत्स्याद्--ध्यानन्तवचरणयोर्नाथ हृदये,
नपूजेद्यावन्ना तवशिवपदाम्भोजयुगकम् ।
नतन्नस्याद्यावत्तव चरणयोर्नु: किलशिरो,
नतावत्सौख्यं स्यादिह जगति शम्भोक्वचिदपि ॥

× × ×

अर्थ–४

हे अशरणशरण भगवन् पशु पते जब तक मनुष्य के हृदय में आपके चरणों का ध्यान नहीं, आपके चरणकमलों की पूजा नहीं, तथा आपके चरणों में मनुष्यनतमस्तक नहीं होता है तब तक संसार में किसी प्रकार का सुख नहीं प्राप्त होता है ।

× × ×

श्लोक–५

विधिं विष्णुं शक्रंविधुमंनिल मग्निं रविमहो,
भजन्त्येके लोके निजहृदि समाधौ हिसततम् ।
वदन्त्येके विज्ञा जगदिदमभूत् कर्मवशग–
न्त्वहन्देवं वन्दे सकलजगताखण्डपरशुम् ॥

× × ×

अर्थ–५

संसार में ब्रह्मा-विष्णु-इन्द्र-चन्द्रमा-वायु-अग्नि-सूर्य आदि देवताओं को अपनी इच्छानुसार लोग भजन करते हैं । बहुत से लोक अपनी अपनी बुद्धि से समाधि के द्वारा हृदयाकाश में निराकार-गगनस्वरूप भगवान् का चिन्तन करते हैं । अनेक विद्वान् तो संसार से अपने-अपने कर्मानुसार ही फल-भोग को निश्चित समझ किसी देवता का भजन पूजन नहीं करते हैं । हे अनाथों के रक्षक आशुतोष शिव ! मैं तो निरन्तर आपका ही नमन करता हूं ।

× × ×

श्लोक–६

नवेदैर्योगीन्द्रैर्मुनिवरगणैर्नापिविदित,
म्परन्तत्वंशम्भोर्हरिविधि सुरेन्द्रैरपियदा ।
समर्थः स्यान्मन्दः कथमहमहङ्कार सहितः
परन्तत्वञ्जाने शिव शिव शिवेतिप्रकथनम् ।।

× × ×

अर्थ–६

हे भगवन् आपके परम तत्व को जब विष्णु-ब्रह्मा-सुरेन्द्र-चारो-वेद-योगीजन-महान् मुनीश्वर आदि नहीं जान सके तो अनेक विषय वासनाओं से दूषित अन्तःकरणवाला अतिअहंकारी मन्द बुद्धि वाला मैं कैसे जान सकता हूँ अतः मैं तो केवल शिव-शिव-शिव इतना ही कहना जानता हूँ ।

× × ×

श्लोक–७

निराकाराजेश स्ववश शितिकण्ठामरगुरो
निरालम्बत्र्यक्ष त्रिपुरहर गम्भीर वरद ।
अनाद्यन्ताकारामित सुभग विश्वम्भरमृड
निवासंशम्भोमे हृदयकमले त्वङ्कुरुसदा ।।

× × ×

अर्थ–७

हे उमानाथ! महेश्वर! हेनिराकार! अज! ईश! स्वतन्त्र! नीलकण्ठ! देवताओं के ईश! अवलम्बरहित! त्रिपुरनाशक गम्भीर स्वभाव! वरद!

आदि अन्तआकाररहित, अतुलसुभग, विश्वम्भर मृड (शिव) आपका निवास मेरे हृदयकमल में सदा रहे।

× × ×

श्लोक—८

लघुस्थूलोदारानघगगन रूपामरपते।
विरूपागण्येड्यामलतनुभवातीतसुमते
अतर्क्याचिन्त्योग्र त्रिभुवनगुरो शाश्वतविभो-
हरत्वंसन्तापम्ममसकलपापान्गुणनिधे॥

× × ×

अर्थ—८

हे विश्नाथ, हेलघु, स्थूल, उदारचित, शुद्धान्तःकरण, गगन-स्वरूप, सुरेश, विषमरूप, गणनाहीन, पूज्य, दोषरहित, पाप तथा पुण्य से रहित, सुमति, तर्क से रहित, अचिन्त्य इस-दीन जन के त्रिविध सन्ताप तथा सकल पापों के समुदाय को हरण कीजिए बिना आपके कौन हरण कर सकता है।

× × ×

श्लोक—९

जरातीतागम्यावनिपति जंगद् वीजसकला-
प्रमेयाचिन्त्यागोचर सकलदेवासुरनुत।
स्वभावस्वच्छन्द स्वजन जन सर्वस्वगहन-
दयालो माम्पाहि त्वमखिल जगन्निन्द्यचरितम्॥

× × ×

अर्थ–९

हेजरातीत, अचित्य, पृथ्वीपति, संसार के आदिकारण, परिमाणहीन, अदृश्य, समस्तसुरवन्दित, सदास्वन्त्र भक्तजनों के सर्वस्व, गूढ़स्वभाव, हे दयासागर भगवन् शिव, संसार में अति-पतित पापी का उद्धार कीजिए।

× × ×

श्लोक–१०

परव्रह्मारिष्ट प्रशमन सदानन्दसगुण·
प्रमाणोपेताज त्रिनयन सुराधीशहरहे !
मुनिध्येय रव्याताऽऽशरणजननाथामलतनो-
पदालम्वंयाचे तवशुभकरं विश्वभरणम् ॥

× × ×

अर्थ–१०

हे परव्रह्म, समस्तविघ्नों को हरण करनेवाले, आनन्दस्वरूप, साकारस्वरूप, वेदादिप्रमाणों से युक्त ! अंजन्मा, हे त्रिनयन, सुराधीश, हर, मुनिजनों के घ्यान करने योग्य, सकलभुवनों के स्वामी, सुन्दर स्वरूप वाले, निराधार के आधारभूत हे शिव ! आपके शुभप्रद चरणों का आश्रय चाहता हूँ।

× × ×

श्लोक–११

प्रगल्भ श्रीकण्ठाघनिकर हरामोघवरद-
प्रजेशानन्ताद्यापरभवहर व्रह्ममहित ।

सुधाहस्तामोद प्रमथगणनाथामलयशः—
सदाध्येयंयाचे तवचरणपद्मं शरणदम् ।

× × ×

अर्थ—११

हे नाथ-प्रतिभाशाली, शोभायुक्त कण्ट वाले, समस्त पाप समूह नाशकरने वाले, सर्वश्रेष्ठ, वेदों से पूजित, पीयूषपाणि, आनन्दस्वरूप, प्रथमआदि गणों के स्वामी, निर्मलयश वाले, निराश्रयों के आश्रय, प्रभोशंकर, मैं सदा आपके चरणकमलों का आश्रय चाहता हूँ ।

× × ×

श्लोक—१२

भवव्याधिध्वंसप्रकृति हर वेदप्रिय गुरो-
जगत्पूज्यव्रह्माऽमरपतिमुनीन्द्रार्चितपद ।
निराधाराचिन्त्य त्रिगुणरहिताऽऽनाथशरण-
लभेनान्यं त्रातारमिह, परमं त्वत्पदयुगात् ।

× × ×

अर्थ—१२

हे शिव-संसार के दुःखजाल को नाश करने वाले, स्वभावसिद्ध वेदों के प्रिय संसार के पूज्य, व्रह्मादेवता ,यति मुनीश्वर आदि से पूजित, स्वावलम्बी, अचिन्त्य, तीनों गुणों से रहित, अनाथों के रक्षक भगवन् शंकर आपके चरणों के अतिरिक्त कोई मेरा सहारा नहीं है ।

× × ×

श्लोक—१३

चिदाकारोमेश प्रणयवश रामप्रियनिर-
ञ्जनाऽऽमर्त्यस्तुत्याऽऽशरणगतिदीनार्तिहरहे ।
प्रसन्नास्यश्रीमत् स्मरहर महाकाल जटिल-
सदालस्वंयाचे तवपद युगन्नाथ सततम् ।।

× × ×

अर्थ—१३

हे चिदानन्दस्वरूप, उमामति, प्रेम के वशीभूत, रामचन्द्र जी के अनन्यप्रिय, निर्गुण, सदाअमर, स्तुति के योग्य, अशरणकेरक्षक, दीनजनों के दुःख हरनेवाले, सदाप्रसन्न ? शोभाशाली ? कामदेव को नाश करने वाले, दुष्टजनों के लिए काल रूप जटा धारी, भगवन् शिव, आपके चरण कमलों का सदा सहारा चाहता हूँ ।

× × ×

श्लोक—१४

अघोरात्मारामान्धकहर सुकारुण्यनिधिचिन्-
मयामूर्तित्र्यक्षद्विकरवहुहस्त श्रुतिमय ।
महेशानाधार श्रुतिधर सुशीलाङ्कुततनो-
प्रभोमे संवासङ्कुरहृदयपद्मे करुणया ।।

× × ×

अर्थ—१४

हे अघोर, आत्माराम (अपने में रमण करने वाले), अन्ध-

कासुर के नाश करने वाले, दयाकीमूर्ति, आनन्दकी मूर्ति स्वरूपरहित, त्रिनेत्र, दोहाथवाले, अनेक हाथ वाले, वेदस्वरूप महेश, सर्व के आधारभूत, वेदों के धारण करने वाले, सुशील, अनुपमशरीर वाले, हे शिव, मेरे हृदय कमल में कृपा करके अवश्य निवास कीजिए।

× × ×

श्लोक–१५

पुरारे कामारे सकल दितिजारे समगते-
प्रभो गौरीनाथाऽऽखिलभुवनभावाऽऽमलतनो।
मयाचेदं स्तोत्रन्तवपदयुगेदेवनिहितं-
विभो–ते स्वीकार्यङ्कुसुमपरिपूर्णाञ्जलिसमम् ॥

× × ×

अर्थ–१५

हे त्रिपुरान्तक, कामनाशक, दैत्यों के शत्रु, सदासमान गति वाले, समर्थ। गौरीनाथ, समस्त भुवनेश्वर, निर्मल शरीर वाले भगवन् शिव १ आपके चरण युग में पुष्पाञ्जलि-सम-समर्पित यह पात्र स्वीकार कीजिये।

× × ×

श्लोक–१६

शिवस्तोत्रञ्चैतत् पठतिशिवदत्तेनरचितं
विशुद्धात्माभक्तया जगतिमनुजः सर्ववरदम्।

दयालुर्विश्वात्मा सकलसुखयुक्तन्नरवरं
शिवःकृत्वान्तेतन्निजशिवपुरीम्प्रापयतिवै ॥

इतिश्रीपं०शिवदत्तशास्त्रिणाविरचितंशिवस्तोत्रंसमाप्तम्।

× × ×

अर्थ–१६

जो मनुष्य भाव सहित शुद्धान्तःकरण से श्री शिवदत्तशास्त्रीकृत इस स्त्रोत का पाठ करेगा वह इस संसार में समस्त सुख को प्राप्त करेगा और शरीरान्त के बाद–करुणा की मूर्ति भगवान् शिव जी उसको अपनी शिवपुरी में निवास देंगे।

× × ×

इतिश्रीपं०शिवदत्त शास्त्रीकृत शिवस्तोत्र का भाषानुवाद समाप्त।

॥ श्रीरामस्तोत्रम् ॥

श्लोक—१

य:सृटष्टित: प्राग्विभुरेकएव—
मायां समाश्रित्य करोतिसर्गम् ।
लीलांविधत्तेजनशिक्षणाय—
तञ्जानकीजीवनमीशमीडे ।

× × ×

अर्थ—१

जो परमात्मा सृष्टि से पूर्व एक ही था वहीं माया (प्रकृति) से युक्त होकर अनेक प्रकार की सृष्टि करता है तथा सांसारिक जनों के शिक्षा (उपदेश) के कारणविविध प्रकार की लीलायें करता है ऐसे परमप्रभु श्रीजानकीनाथ रामकी मैं स्तुति करता हूँ।

× × ×

श्लोक—२

रामाभिधोयो रमणीयवेषो—
मोदन्ददौसर्वजनेभ्यएव ।
तंसच्चिदानन्दमज म्परेशं—
सीताधिनाथम्प्रणामामिमूर्ध्ना ।

× × ×

अर्थ—२

जिसप्रभूने श्रीरामनामयुक्त होकर-सुन्दरवेष धारणकरके समस्त-विश्वकेलोगों को आनन्दित किया। ऐसे परमानन्द-स्वरूप-अजन्मा परमेश्वर-श्रीसीतानाथ रामकोनतमस्तक प्रणाम करता हूँ।

× × ×

श्लोक–३

पित्राज्ञयागाधिसुतेनसाक–
न्त्रातुम्मखञ्चाश्रमगस्तदानीम् ।
यस्ताडकादीन् समहन् क्रतुघ्नान्–
रामं ससीतम्प्रणमामिमूर्ध्ना ।

× × ×

अर्थ–३

जो पिताकी आज्ञा से विश्वामित्र के साथ उनके आश्रम में जाकर यज्ञकार्य को नष्ट करने वाले ताड़का आदि अनेक राक्षसों को मारा ऐसे परमप्रभु रामको भगवतीमाता सीता के सहित नतमस्तक हो प्रणाम करता हूँ ।

× × ×

श्लोक–४

पितुर्निदेशात्खलु राज्यलक्ष्मीं–
विहायसीताऽऽनुजलक्ष्मणाभ्याम् ।
वनङ्गतन्नाशितदेवशत्रु–
न्नमामिरामङ् क्षितिजापतिन्तम् ।

× × ×

अर्थ–४

जिन्होंने पिताकी आज्ञासे राज्यलक्ष्मी को त्यागकर-सीता-तथा लघुभ्राता लक्ष्मण जी के साथ वन में जाकर देवताओं से

वैर रखनेवाले राक्षसों को मारा। ऐसे जानकीनाथ रामको मैं प्रणाम करता हूँ।

× × ×

श्लोक—५

सौमित्रिणा सहमहीसुतयात्रिकूटा—
दापान्तमच्युतमनन्तगुणंसुरेशम् ।
मायाधवं सुजवपुष्पकयानसंस्थं—
श्रीजानकीहृदयवासमहन्नमामि ।

× × ×

अर्थ—५

लंका से सुन्दर वेगवाले पुष्पक विमानमेंविराजमान सीता-लक्ष्मण जी के साथ आतेहुए-अच्युत-अनन्त-गुणवाले-देवताओंकेईश-लक्ष्मीकेपति-श्रीजानकी जी के हृदयकमल में वासकरनेवाले श्रीराम जी को मैं नमस्कार कररहा हूँ।

× × ×

श्लोक—६

श्रीसीतया शोभित वामभागं—
सौमित्रिणा शोभितदक्षिणाङ्गम् ।
सिंहासनारूढमजस्रमेव—
रामम्महीजाप्रियमानतोस्मि ।

× × ×

अर्थ—६

जिनके वाम में सीता जी विराजमानहैं और दक्षिणभाग-में

लक्ष्मण जी विराजमान हैं सिंहासन पर अत्यन्त शोभासेयुक्त-श्रीजानकी जी केपरमप्रिय उन श्रीरामजी को मैं नमस्कार कर रहा हूँ।

× × ×

श्लोक—७

हेरामचन्द्र ? पुरुषोत्तम ? हेदयालो ?—
हेभव्य रूप ? शिवविष्णुविरञ्चिवन्द्य ? ।
हेवासुदेव ? रघुनाथ ? मुनीन्द्रपूज्य ?—
सीतापते ? सपदि पालय मामनाथम् ।

× × ×

अर्थ—७

हे रामचन्द्र-हेपुरुषोत्तम-हेदयालु-हेभव्यस्वरूप-शिव-ब्रह्मा और विष्णु से पूजित-हे वासुदेव-हे रघुनाथ-श्रेष्ठमुनियों से पूजित-हे सीताकेनाथ रामजी मेरीरक्षा कीजिये।

× × ×

श्लोक—८

हे श्रीश ? लोकप ? दयार्णव ? हे परेश !
नानावतारधर? निर्गुण? निर्विकार? ।
हे तातभक्त ? धरणीधर ? धर्मपाल ?—
माम्मैथिलीप्रिय समुद्धर पापसिन्धुम् ।

× × ×

अर्थ—८

हे लक्ष्मीपति-संसारकेरक्षक-दयाकेसागर-हे सर्वश्रेष्ठ-नानाप्रकार के अवतारों को धारण करनेवाले-निर्गुण-विकार-रहित-पिताआदि केभक्त-वारहरूपसे या शेषरूपसे पृथ्वीको धारण करनेवाले-धर्म-रक्षक-मैथिली (सीता) के नाथ मुझे पापके समुद्र से वाहर कीजिए।

× × ×

श्लोक—९

हेचित्रकूटकृतवास ? जनार्तिहारिन् ?—
हे चीर वल्कलजटाधर ? चापधारिन् ।
हेसप्ततालहर ? लक्ष्मणावन्द्यपाद ?—
माम्पाहि वै जनकजा—वर ? रामचन्द्र ।

× × ×

अर्थ—९

हेचित्रकूटमें निवास करने वाले-मनुष्योंकीआपत्ति हरनेवालेचीर-वल्कल और जटाओं को धारण करनेवाले-चापको-धारण करने वाले-सात ताड़ के वृक्षों को नाश करनेवालेलक्ष्मणजी से पूजित चरणकमल-श्रीजानकी जी के स्वामी हे रामचन्द्रजी मेरीरक्षा कीजिये।

× × ×

श्लोक—१०

हेदुष्टराक्षसनिषूदन ? शान्त ? दान्त ?—
मारीचनाशन ? पुरातन ? पद्मनाभ ? ।

हेलक्ष्मणानुज ? जटायुदयाकराघ ?–
पापाम्वुधौमयि दयाकुरु जानकीश ? ।

× × ×

अर्थ—१०

हे दुष्टराक्षसोंकोमारनेवाले-हे शान्तरूप-हे दयालु-मारीच के मारनेवाले-हे पुरातन-ब्रह्माजी का जन्मस्थान कमलको उत्पन्न-करनेवाले-लक्ष्मणजीके बड़ेभाई-जटायुपरदयाकरनेवाले-सवसेप्रथम-प्रकटहोनेवाले-हेजानकीजीकेननाथश्रीरामजी, पापमूर्ति मुझपर दयाकीजिए ।

× × ×

श्लोक—११

हेनाथ ? रावणाशिरोभुजनाशकारिन् ?–
हे चक्रवर्तिपदवी वहुकालधारिन् ? ।
हे सर्गपालनविनाशनकर्मधारिन् ?–
मांरक्षहेजनकजाऽऽखिलशोकहारिन् ? ।

× × ×

अर्थ–११

हेनाथ-रावणकेसिर तथा भुजाओं कोनाशकरनेवाले-चक्रवर्तिपदवी को वहुकालतक भोगनेवाले-संसार-की उत्पत्ति-रक्षा तथा नाश कर्म को करने वाले-हे सीताजीके समस्त शोकको-नाशकरनेवाले रामजी-मेरी रक्षा कीजिए ।

× × ×

श्लोक—१२

हे जानकीविरहवह्निनिपीडिताङ्ग ?—
सुग्रीवराज्यद ? सुखप्रद ? वालिघात ?
हे वायुपुत्रकृतयोगकृतारिनाश ?—
त्वान्नौमि भूमितनयाहृदयाधिवास ? ।

× × ×

अर्थ—१२

श्रीजानकी जी के बिरहरूपी अग्नि से पीड़ित अंग वाले-सुग्रीव को राज्य देने वाले-सर्वसुखदाता-वालि को मारने वाले-श्री हनूमान् जी के संयोग से राक्षसों को मारने वाले-हे भूमि की पुत्री सीता के हृदय में निवास करने वाले श्रीराम जी मैं आपकी वन्दना करता हूँ ।

× × ×

श्लोक—१३

हेपूर्णसत्य ? वहुरूप ? सहस्रहस्त ?—
जीमूतवर्ण ? मधुसूदन ? मन्दहास ? ।
हेविष्णुरूप ? जगदीश ? हरीशसेव्य ?—
माम्पाहिराम ? धरणी तनयाधिनाथ ? ।

× × ×

अर्थ—१३

हे सत्यस्वरूप-अनेक रूप धारण करने वाले-असंख्य-हाथ वाले-मेघ के समानरूप-मधुदैत्य के मारने वाले-मन्द मन्द हंसने वाले-

हे विष्णु स्वरूप-जगदीश-हनूमान् आदि वन्दरों से सेवित-अथवा इन्द्रादि देवताओं से सेवित-हे पृथ्वी की पुत्री (सीता) के नाथ मेरी रक्षा कीजिए।

× × ×

श्लोक—१४

हेविश्वरूपवरदायक ? हेनृटसिंह ?—
राजीवलोचन ? शिवप्रियाचित् स्वरूप ? ।
हेविश्ववन्द्य ? भरताग्रज ? राघवेश ?—
सीतासुलालितपदम्वुज ? रक्षदीनम् ।

× × ×

अर्थ—१४

हे संसार स्वरूप-समस्त वर देने वाले-हे नृसिंह-कमलनेत्र-शिव के प्रिय-आनन्दस्वरूप-संसार से वन्दनीय-भरत के बड़े-भाई-सीता जी से सेवित हैं चरणकमल जिनके ऐसे प्रभु राम दीन की रक्षा करें।

× × ×

श्लोक—१५

हेकौशलेन्द्र ! पुरुषोत्त ! हे वरेण्य !—
गोविन्द ! वामन ! हरेऽवनिभारहार ! ।
हेविश्वतोमुख ! विभीषणभीतिहारिन् !—
विष्णो ! विदेहतनयावर ! राम ! रक्ष ॥

× × ×

अर्थ—१५

हे कौशलेन्द्र हे पुरुषोत्तम-हे सर्वश्रेष्ठ हे गोविन्द हे वामन-हे हरे-हे पृथ्वी के भार को नाश करने वाले हेअंसङ्ख्यमुखवाले-हे विभीषण की रक्षा करने वाले हे विष्णो-हे सीता के नाथ राम मेरी रक्षा कीजिये ।

× × ×

श्लोक—१६

हेसर्वमङ्गलमयाऽऽखिलपापनाश !—
ब्रह्मण्य ! शाश्वत ! शरण्य ! जगन्निवास ! ।
माम्पापमूर्तिमखिलेश्वर ! रामभद्र !—
हीनङ्कुजाधव ! गुणैरव चक्रपाणे ! ॥

× × ×

अर्थ—१६

हे ङ्गलस्वरूप समस्त पापों के नाश करने वाले ब्राह्मण और वेदों की रक्षा करने वाले शरणागत रक्षक संसार क आश्रय समस्त (चराचर के) विश्व के नाथ चक्र को धारण करने वाले सीता के प्राणनाथ हे रामचन्द्रजी समस्त गुणों से हीन मेरी रक्षा कीजिये ।

× × ×

श्लोक—१७

इंदरामस्तोत्रंम्पठतिशिवदत्तोनरचित—
न्नरोभक्त्या लोके परम सुखमाप्नोति सततम् ।

ततोऽन्ते रामस्यव्रजति सुभगंलोकममल–
वन्तनन्तन्दुष्प्राप्यञ्जनकतनयानाथ कृपया ॥

इति श्री शिवदत्तशास्त्रिणा विरचित श्रीरामस्तोत्रं समाप्तम्

× × ×

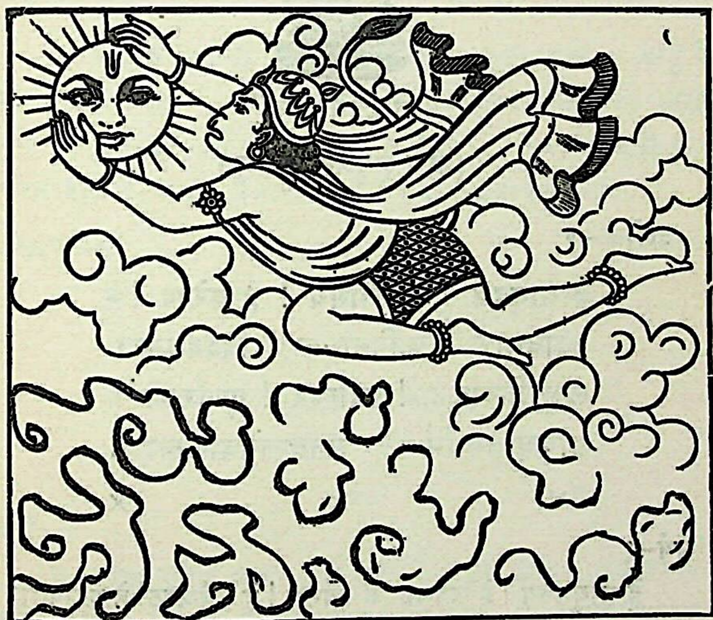
अर्थ—१७

जो मनुष्य भक्ति पूर्वक इस शिवदत्तशास्त्री से रचित श्री रामस्त्रोत का पाठ करेगा वह मनुष्य भगवान श्रीराम- की कृपा से अतिदुष्प्राप्य-परमानन्द सुख को प्राप्त करेगा तथा अन्त में दुष्प्राप्य अनन्त-अति सुन्दर-श्रीराम जी के लोक को प्राप्त करेगा ।

इति श्री शिवदत्तशास्त्री से रचित श्रीराम स्त्रोत्र का हिन्दी भाषानुवाद समाप्त ।

———

ॐ श्री हनुमतेनमः ॥



हे भक्तराज ! कपिराज ! शिवावतार !–
ज्ञानस्वरूप ! हृदयस्थितरामरूप ! ।
दीनार्तजीवन ! समीरणपुत्र ! धीमन् !–
त्वामाञ्जनेयमनिशं मुखभानुमीडे ॥



"श्री हनुमतेनमः"

(अथ हनुमत्स्तोत्रम्)

श्लोक–१

हे वायुपुत्र ! करुणामय ! हे वरेण्य !–
रुद्रावतार ! कपिनायक ! विश्ववन्द्य।
लङ्काविदाहक, ! परात्पर ! पुण्यराशे !
सञ्चिन्तयामि सततन्तववालरूप ।।

× × ×

अर्थ–१

हे वायुतनय ! हे करुणा के स्वरूप ! हे सर्वश्रेष्ठ! हे रुद्रावतार ! हे कपिराज! हे संसार में प्रार्थना के योग्य ! लंका को भस्म करने वाले ! हे पुण्यकीराशि ! हनुमान् जी आपके वाल स्वरूप का मैं सदा चिन्तन करता हूँ।

श्लोक–२

हे जानकी हृदयवास ! समीर वेग !–
कन्दर्पदर्प हर ! पुण्यगते ! कपीश ।

हे दीनपालक ! भवार्णवतारकेश !—
बालस्वरूपमनिशम्भवतः स्मरामि ॥
× × ×

अर्थ—२

हे भगवती सीता को हृदय में धारण करने वाले ! वायु के सदृश वेग वाले ! कामदेव के अभिमान को नाश करने वाले पुण्यगति देने वाले कपिराज ! हे दीन रक्षक! संसार सागर से पार करने वाले ! आपके बालरूप का मैं सदा ध्यान करता हूँ ।

श्लोक—३

हे निष्कलङ्क ! निगमागमनूयमान !—
संसार भीतिहर ! लक्ष्मणजीवदातः ।
हे स्वर्णवर्णरघुनाथपदाब्जभृङ्ग !—
वालाख्यवायुतनय त्वमवाघपूर्णम् ॥
× × ×

अर्थ—३

हे कलङ्क रहित शास्त्र और वेदों से स्तुत्य संसार भय को दूर करने वाले ! लक्ष्मण के जीवनदाता ! हे स्वर्ण के समान रुपवान् रामचन्द्र जी के चरण कमल भृङ्ग! वालाख्यवायु पुत्र आप अपराधी जन की रक्षा कीजिये ।

श्लोक—४

हे सर्व सङ्कटहरामरवन्द्यपाद !—
सर्वाश्रयाखिलवरप्रद वेदवेद्य ।

ओङ्काररूपशरणागत शोकहारिन् !—
ध्यायामि देव भवतो हृदिवालरूपम् ।।

× × ×

अर्थ ४

हे समस्त सङ्कट को दूर करवे वाले ! देवताओं से पूजित ! सबके आधार ! सम्पूर्णवरदान देनेवाले ! वेदों द्वारा जानने योग्य! ओङ्कारस्वरूप ! शरण में आये हुये का शोक हरने वाले ! हे देव ! आपके बालरूप का ध्यान करता हूँ ।

श्लोक—५

ध्यायन्ति केचिदनिशंहृदिरक्तवर्णं,
रक्ताम्वरम् परमशैलधरं स्वरूपम् ।
नित्यभ्मजेऽहममलङ् किलहेमरूपन्,
तत्सर्वसङ्कटहरम्प्रिय वालरूपम् ।।

× × ×

अर्थ ५

हे सङ्कटमोचन वायुतनय ! कुछ लोग अपने हृदय में रक्त वर्ण वाले परमशैल को धारण करने वाले आपका ध्यान करते हैं मैं तो संकट को दूर करने वाले हेमरूप वाले प्रिय वाल रूप का ही ध्यान करता हूँ ।

श्लोक—६

हे सर्व दुःखहर ! भूतपिशाचरक्षो—
यक्षादिनाशनमहेश्वर ! योगगम्य ।

हे भीम विक्रमशुभाङ्ग ! जगत्प्रसिद्ध !—
बन्दे प्रभञ्जनशिशो ! तवपादपद्मम् ।।

× × ×

हे समीरतनय! हे समस्त दुःख दूर करने वाले! भूत पिशाच-यक्ष, वेताल कूष्माण्ड आदि को नाश करने वाले! हे महेश्वर ! योग द्वारा जानने योग्य भयंकर पराक्रम वाले ! हे शुभशरीर वाले! संसार में प्रसिद्ध ! आपके चरण कमलों की मैं बन्दना करता हूँ ।

श्लोक—७

वाल्येरवौमुखधृते चमहान्धकारे—
नाशं विचार्य जगत स्त्रिदशैस्स्तुतेन ।
मुक्तस्त्वयादिनकरः कृपयासजीवस्—
त्वामञ्जनाशिशुमहंहनुमन्तमीडे ।।

अर्थ—७

हे अञ्जनातनय ! हनुमान् जी ! अपनी वाल्यावस्था में आपने सूर्य को लाल फल समझ कर मुख में रख लिया था संसार में महान् अन्धकार होने पर संसार का नाश विचार कर देवताओं की विशेष प्रार्थना पर सूर्य को सजीव बाहर कर दिया था ऐसे सूर्य को मुख में धारण करने वाले बालक रूप आपका मैं सदा ध्यान करता हूँ ।

× × ×

श्लोक—८

यो मैथिली विरहवह्निनिपीडितस्य—
रामस्य चान्तिकमगात् सुरवन्दितस्य ।

भूत्वातिसुन्दरवटु कपिराजहेतोस्–
तस्मैनमोहनुमते वटुरूपकाय ॥

× × ×

अर्थ–८

जो जानकी के वियोग से दुखी देवताओं से पूजित श्री रामचन्द्र जी के पास सुग्रीव के कारण अति सुन्दर वटुरूप धारण करके गये थे उन वटु रूपधारी हनुमान् जी को नमस्कार करता हूँ।

श्लोक–९

लङ्काम्प्रयातुरधिनीरधियस्यवीर्य–
ज्ञातुं हि सान्तिकमगात्खलुनागमाता ।
दृष्ट्वा महल्लघुतमञ्च वपुर्विमोहा–
तं स्थूलसूक्ष्मवपुषम्प्रभजे कपीशम् ॥

× × ×

अर्थ–९

श्री जानकी जी के पता लगाने के लिए लंका को जाते हुए समुद्र में जिन हनुमान् जी के पराक्रम की परीक्षा के लिए नागमाता (सुरसा) हनुमान् जी के अति वृहत् तथा अति सूक्ष्म रूप को देखकर मोहरहित हुई उन परम दयालु स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर धारण करते वाले कपिराज की मैं स्तुति करता हूँ।

श्लोक–१०

उल्लङ्घ्य सागरमगाधमयाच्चलङ्का,
मन्वेष्टुमत्रमशकाकृतिमेवसीताम् ।

योऽधाद्दयार्णविकपीन्द्रविलङ्घितृाब्धिं–
वन्देऽञ्जना सुतमहम्मशकाकृतिन्तम् ॥

× × ×

अर्थ–१०

जिन्होंने अगाध समुद्र को लाँघकर मशक की आकृति में श्री सीता का पता लगाया उन दया के समुद्र अञ्जनापुत्र मशक रूप धारण करने वाले हनुमान् की मैं सदा स्तुति करता हूँ ।

श्लोक–११

विप्राकृतिञ्चविनिधार्य विभीषणंयः–
पप्रच्छ भूमि तनयास्थितिमेवतत्र ।
प्रैक्षिष्ट तांसमभिभाव्य जहारशोकन्–
तं विप्ररूपधरमार्यकपिन्नमामि ॥

× × ×

अर्थ–११

जिन्होंने विप्रवेश धारण करके विभिषण के पास जाकर श्री जनकनन्दिनी सीता जी का पता पूछ कर श्री जानकी जी के पास जाकर वार्ता कर उनके शोक को दूर किया उन परम दया की मूर्ति कपिराज श्री हनुमान् जी को नमस्कार करता हूँ ।

श्लोक–१२

सीतापुरः सपदि यो बहुरूप धारी–
भूत्वाल्पवानरसमः खलुरक्तवक्त्रः ।

दत्वाङ्गुलीयकमनन्तगुणोजगाद–
तंस्वल्पवानरमहं शिरसानमामि ॥

× × ×

अर्थ–१२

सीता जी के सामने अति छोटा रक्त शरीर धारण कर अंगूठी को देकर अभय शरीर धारण करने वाले श्री केसरीनन्दन को शिर से नमस्कार करता हूँ।

श्लोक–१३

रामं स शेषमहिरावण आत्मगेहे–
देव्यैनिनाय वलिदान विधान हेतोः।
तत्रैत्यतम्पवनरूपधरोजघान–
वन्देऽनिशम्पवनरूपधरं हरीशम् ॥

× × ×

अर्थ–१३

जिस समय अहिरावण अपने घर श्री राम तथा लक्ष्मण जी को देवी के लिए वलिदान निमित्त ले गया था उस समय वायु रूप धर के उस अहिरावण को मारा ऐसे वायु रूप धारण करने वाले उन परम कारुणिक श्री पवन पुत्र की स्तुति सदा करता हूँ।

श्लोक–१४

शक्त्याहतो रघुपतेरनुजोरणेयद्–
द्रोणाचलंसमुपनीय सहौषधेन।

सञ्जीवितश्च खलुयेन जहर्षराम–
स्तन्द्रोणभूधरधरं शरणंप्रपद्ये ॥

× × ×

अर्थ १४–

लक्ष्मण जी को शक्ति लगने से मूर्छित होने पर औषधि सहित द्रोणगिरि को लाकर लक्ष्मण जी को जीवित किया तथा श्री राम जी को प्रसन्न बनाया ऐसे शान्त स्वरूप द्रोण पर्वत को धारण करने वाले श्री वायुनन्दन को निरन्तर नमस्कार करता हूँ।

श्लोक–१५

लङ्कारणेच निहतेषु निशाचरेषु–
विप्राकृतिर्भरतसन्निकटम्प्रगम्य।
संश्रावितं सपदि रामशुभञ्चयेन–
विप्राकृते हंनुमतश्चरणंश्रयेऽहम् ॥

× × ×

अर्थ १५–

जिन्होंने लंका के रण में राक्षसों के नाश होने पर ब्राह्मण का वेष धारण कर भरत जी के पास जाकर श्री राम का समस्त कुशल वृत्तान्त सुनाया उन विप्र रूप धारण करने वाले श्री हनुमान जी के चरणों का आश्रय लेता हूँ।

श्लोक–१६

त्वाञ्छेत्तुमत्यधिक गर्वधरंयदातु–
चक्रं हरे गंतमभूत् सहसा गृहीत्वा।

आस्ये कृतङ्कवलितं व्यथितन्निशम्य--
मुक्तन्तदाशुमुखचक्रधरन्नमामि ॥

× × ×

अर्थं १६--

किसी समय आपके मारने के लिए गर्वित सुदर्शन चक्र आकाश में आप के पास गया आपने चक्र को मुख में रख कर दातों से पीसना चाहा तो चक्र दुःखी हो रोने लगा अपने शीघ्र ही चक्र का मुख से बाहर कर दिया ऐसे अत्यन्त दया की मूर्ति चक्र को मुख में धारण करने वाले वायु पुत्र आपको नमस्कार है।

श्लोक--१७

सिन्दूरविन्दुममलेदधतीं स्वभाले--
सन्तुष्टयेरघुपते र्जनकात्मजान्ताम् ।
दृष्ट्वाहिरक्ततनुकः समभून्तदानी--
न्तं सर्वरक्तवपुषं कपिराजमीडे ॥

× × ×

अर्थ १७--

किसी समय जगज्जननी माता सीता को माथे में सिन्दूर विन्दु धारण करतीं हुई देख कर कि श्री राम इस सिन्दूर बिन्दु से प्रसन्न होते हैं ऐसा समझ कर आपने शीघ्र ही श्री राम की प्रसन्नता हेतु सम्पूर्ण शरीर में सिन्दूर धारण कर लिया कि जिससे सारा शरीर लाल हो गया ऐसे श्री राम के अनन्य भक्त शिरोमणि सम्पूर्ण रक्त तनुधारी कपि राज की मैं स्तुति करता हूँ।

श्लोक—१८

कंसारिवाहनमवेक्ष्यकृताभिमान–
ञ्चिक्षेप तन्तुमलयाचलतोऽम्बुधौयः ।
सुस्रावरक्तमधिकं सहसातदङ्गात्–
प्रक्षिप्ततार्क्ष्यमनिशंहृदि भावयेतम् ।।

× × ×

अर्थ—१८

किसी समय महाखग-गरुण को अपने बल आदि पर विशेष अभिमान युक्त देखकर आपने उसको मलयाचल से समुद्र में फेंक दिया था उसके शरीर से अधिक रक्तधारा बहने लगी थी-उन गरुड़ को फेकने वाले अञ्जना नन्दन का ध्यान मैं सदा हृदय में करता हूँ।
कथा-कृष्ण ने गरुड़ को अभिमानयुक्त जानकर हनूमान् जी के पास बुलाने को भेजा कि कृष्ण ने बुलाया है हनूमान् जी ने कहा चलो मैं आता हूँ—गरुड़ कहते थे मैं साथ ले चलूंगा तब हनूमान जी ने मलयाचल से समुद्र में फेंक दिया और वे द्वारिकापुरी में कृष्ण से मिलकर वापस चले गये तब गरुड़ बाद में आये और बोले हनूमान् जी आ रहे हैं—कृष्ण ने कहा वे तो होकर चले गये तुम क्यों रोते हो तब सारा हाल कहा।

× × ×

श्लोक—१९

हे सर्वसत्य ! समरप्रिय ! सर्ववास !–
सर्वज्ञ ! सत्तम ! सनातन ! सत्वसार ।

सर्वस्व ! सर्वंद ! समान ! सहस्ररूप–
मां सर्वमङ्गल ! समीरणपुत्र ! पाहि ॥

× × ×

अर्थ–१९

हे सर्वसत्य ! सङ्ग्रामप्रिय ! सबमें रहने वाले ! हे सर्वज्ञ ! श्रेष्ठ ! सनातन ! समान ! असख्य-रूप धारण करने वाले ! समस्त-मङ्गलयुक्त ! हे वायुपुत्र हनुमान् जी मेरी रक्षा कीजिये ।

× × ×

श्लोक–२०

उत्साहभक्तिगुण धैर्य्यंपराक्रमाति–
वेग प्रतापसमताऽऽश्रयता स्वरूप ।
गाम्भीर्थ्यं शान्तिपटुताऽऽमरताविवेक–
शीलत्वगौरवदयाधर पाहि दीनम् ॥

× × ×

अर्थ–२०

उत्साह-भक्ति-गुण-धैर्य्य पराक्रम अतिवेग-प्रताप समता आश्रयता आदि के साक्षात् स्वरूप ! गम्भीरता-शान्ति-चतुरता-अमरता-विवेक-सुशीलता-गौरव दया आदि के धारण करने वाले हे हनुमान् जी इस दीन की रक्षा कीजिये ।

× × ×

श्लोक–२१

निर्द्वन्द ! निर्मल ! निरामय ! निष्कलङ्क !–
निर्दोष ! निर्गुण ! निरन्तर ! निष्प्रपञ्च ।

निष्णात ! निष्कपट ! निर्मम नित्यशुद्ध !—
निश्चिन्त ! निर्भय ! निवारय निन्द्यकर्म ॥

× × ×

अर्थ–२१

हे द्वन्दहीन ! निर्मल ! रोगादिरहित ! कलङ्कहीन दोषरहित! निर्गुण ! निरन्तर ! प्रपञ्चहीन! सदापवित्र !कपटरहित!हेममताहीन! नित्यशुद्ध !चिन्तारहित !भयरहित !हे अञ्जनानन्दन निन्द्य कर्मों से मुझे दूर कीजिये ।

× × ×

श्लोक–२२

पूर्वाननञ्च किलयाम्यमुखं ह्युदारन्–
त्वाम्पश्चिमाननमहं वलवुद्धयगारम् ।
सौम्याननं रघुपतेः पदपद्मचारन्–
तूर्ध्वाननं हृदि भजे कृतमन्दमारम् ॥

× × ×

अर्थ २२–

अति उदार वल और बुद्धि के निधान श्रीरामचन्द्र जी के चरणकमलों में सदा वास करने वाले कामदेव को मन्द(तिरस्कृत) वननानेवाले पूर्वादि दिशा में तथा ऊर्ध्व मुखधारण करने वाले उप पञ्चमुखी (पञ्चमुखवाले)श्री हनुमान् जी का मैं सदा हृदय में भजन करता हूँ ।

× × ×

श्लोक २३–

त्वामादि शक्तिकृपयापरि पूर्णकामं–
सेवावशीकृतमहासुख धामरामम् ।
सद्ब्रह्मचारिवरमस्त्रपवृन्दवामं–
वन्देऽञ्जनासुतमहम्भुवनाभिरामम् ।।

× × ×

अर्थ २३–

जगज्जननी भगवती जानकी जी की कृपा से पूर्ण मनोरथ वाले सेवा से अत्यन्त सुख के निधान श्रीराम जी को वश में करने वाले तथा राक्षसगण के महान् शत्रु श्रेष्ठ ब्रह्मचारी तथा संसार के प्रिय अञ्जनानन्दन श्री हनुमान् जी की मैं सदा स्तुति करता हूँ ।

× × ×

श्लोक २४–

सर्वार्थसाधनकरङ्करुणावतारं–
शश्वत्प्रसन्नवदनं हृतपापभारम् ।
शाखामृगोत्तममहञ्जनमोदकारं–
वन्दे महेशतनयम्मरुतःकुमारम् ।।

× × ×

अर्थ २४–

सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले कृपा के अवतार सदा प्रसन्न मुख वाले-समस्त पाप भार को हरण करने वाले निज भक्त

को आनन्द देने वाले-शंकर जी के पुत्र-वायुनन्दन वानरों में श्रेष्ठ श्री हनुमान् जी की मैं बन्दना करता हूँ।

श्लोक २५–

जातोदशाननवधाय सुरार्तिनष्ट्यै–
रुद्रात्मजस्त्वखिलरूप धरोहनूमान्।
तं रामचन्द्रपदपङ्कज भृङ्गराजं–
वन्देऽञ्जना सुतमहम्प्रभुभक्तराजम्॥

× × ×

अर्थ २५–

देवताओं की रक्षा के लिये रावण के वध के लिये अनेक रूपों को धारण करने वाले श्री भगवान् शंकर के अंश श्री रामचन्द्र जी के चरण कमल सेवक एवं परम भक्त अतुल पराक्रम वाले श्री हनुमान् जी की स्तुति निरन्तर करता हूँ।

श्लोक २६–

स्थित्वा महायुधि धनञ्जयवाहनस्य–
केतावदायि विजयो हरिपुङ्गवेन।
पार्थायतत्रभवता पवनात्मजेन–
केतुस्वरूप महमद्यभजे कपीशम्।

× × ×

अर्थ २६–

महाभारत के महारण में अर्जुन के ध्वजा में गुप्त रूप से स्थित होकर आपने अर्जुन को विजय प्राप्त कराई ऐसे परम करुणा के

धाम केतु स्वरूप हनुमान् जी मैं सदा आपका भजन करता हूँ।

श्लोक—२७

आनन्दकन्द ! पुरुषोत्तमरामभक्त !
आपत्तिजालविनिवारण पूर्ण शक्त।
शाश्वत् प्रसन्न ! हरिपुङ्गवदिव्यरूप !
रक्षाञ्जना सुतजनङ्कपियूथभूप ॥

× × ×

अर्थ—२७

हे आनन्द स्वरूश ! हे भगवान् राम के अनन्य भक्त ! आपत्ति के समुदाय को नाश करने वाले, सदा प्रसन्न रहने वाले, वानरों में श्रेष्ठ सुन्दर रूप वाले, हे अञ्जनामाता के प्रिय पुत्र ! इस दीन जन की रक्षा कीजिये।

श्लोक—२८

हे भक्तवश्य ! शरणागत कामपूर्ते !
गूढ़स्वरूप जगती प्रिय शान्त मूर्ते।
श्रीमद् वरेण्यपवनात्मजसत्यरूप !
माम्पाहिनाथहनुमन् प्रियवालरूप ॥

× × ×

अर्थ—२८

हे भक्तों के वश में रहने वाले ! शरणागत की पूर्ति करने वाले ! गूढ़ रूप से रहने वाले ! संसार के प्रिय शान्त मूर्ति !

उत्तमों में उत्तम, सत्य रूप वाले, प्रियवाल रूप, हनुमान् जी मेरी रक्षा कीजिये ।

श्लोक–२९

हे रावणा स्यभुजमर्दक ! कालरूप !
तापत्रयोपशमनप्रियरामरूप ।
संसार सागर सुतारणहेतुभूत,
माम्पाहिदीनमनिशन्ननुरामदूत ॥

× × ×

अर्थ–२९

हे रावण के मुख और भुजाओं को मर्दन करने वाले ! राक्षसों के लिये काल रूप तीनों प्रकार के तापों को शमन करने वाले, संसार सागर के तारणभूत, हे रामचन्द्र के प्रिय दूत ! दोनों की रक्षा करने वाले, इस दीन की रक्षा कीजिये ।

श्लोक–३०

हे श्वेत वाहन रथध्वज-गुप्तवास,
हे जानकी रमणहृत्कमलाधिवास ।
लाङ्गूलपातविहिताऽखिलवैरिनाश,
माम्पाहिनाथहृदये कृतधी प्रकाश ॥

× × ×

अर्थ–३०

हे अर्जुन के रथ की ध्वजा में गुप्त रूप से निवास करने वाले ! हे श्री राम की मूर्ति को हृदय कमल में धारण करने वाले ! अपनी

पूंछ से समस्त शत्रु गुणों का नाश करने वाले ! हृदय में बुद्धि का प्रकाश करने वाले ! ऐसे दया मूर्ति वायुनन्दन मेरी रक्षा कीजिये ॥३०॥

श्लोक–३१

तत्वप्रकाशकजितेन्द्रियशैलधारिन् !
निःसङ्गचिन्मयशरणभयापहारिन् ।
व्रह्माण्डनायक! विशारद! पूर्णाकाम !
नित्यञ्जपामि हरिराज ! तवैवनाम ॥

× × ×

अर्थ ३१–

हे तत्वों के प्रकाशक ! जितेन्द्रिय ! हे पर्वत को धारण करने वाले ! हे निःसङ्ग ! आनन्द स्वरूप ! शरण में आये हुये जन के भय को दूर करने वाले ! हे ब्रह्माण्ड के नेता ! विशरद ! हे काम को पूर्ण करने ! हनुमान् जी ! आपके ही नाम का मैं निरन्तर जप करता हूँ ॥३१॥

श्लोक ३२–

हे रामजीवन ? सदाप्रिय राम काम,
वेदान्तवेद्य ! हृदये तव राम नाम ।
ये चिन्तयन्तिसततन्तवपूर्णरूपन्–
तेनव्रजन्तिमनुजा नरकान्धकूपम् ॥

× × ×

अर्थ ३२--

राम जिनका जीवन है ऐसे हे वायु तनय हनुमांन् जी ! सदा राम के कार्य में मन लगाने वाले ! वेदान्त से जानने योग्य हृदय में सदा राम के नाम को धारण करने वाले, हे ज्ञान मूर्ति ! अजर ! अमर ! कपिराज । जो लोग आपके पूर्ण रूप का चिन्तन करते हैं वे नरक रूपी अन्धकूप में नहीं पतित होते हैं ।

श्लोक ३३--

हे गोष्पदी कृतनदीशनिरञ्जनेश !
चिन्तामणेगुणनिधेऽजितवानरेश ।
दुःस्वप्ननाशन ! कलाधर ! भक्तिहीनं,
शक्तिस्वरूपपवनात्मज ! पाहिदीनम् ॥

× × ×

अर्थ ३३--

हे गौ के पद के तुल्य समुद्र को पार करने वाले! हे निरञ्जन-नेश ! चिन्तामणि ! गुणों के सागर ! हे अजित ! हे वानरेश ! दुःस्वप्प-हनुमान् जी ! भक्ति हीन दीन जन की रक्षा कीजिये ।

श्लोक ३४--

हे स्थूल सूक्ष्म शरणागततापहर्तः !
सिद्धार्थ सिद्धिद ! निरामय लोकभर्तः ।
लङ्केशगर्व हर ! पापचयापहारिन्-
व्याधीन्निवारय सदाहृदि मे विहारिन् ॥

× × ×

अर्थ—३४

हे स्थूल स्वरूप ! हे सूक्ष्म स्वरुप ! शरणागत के ताप दूर करने वाले ! हे सिद्ध अर्थ ! सिद्धियों के देने वाले ! हे निराशय ! (रोगरहित) हे लोक के भरण करने वाले ! रावण के गर्व को हरने वाले पापों के समुदाय को नाश करने वाले ! दया के सिन्धु ! हे हनुमान् जी ! समस्त व्याधियों को दूर कीजिए ।

श्लोक—३५

लङ्काधिपात्मजविनाशक ! हे सुधीश !
संसारकष्टहर ! हे करुणानदीश ।
आपत्तिसिन्धुपतितङ् कृपयातिदोनम्
संरक्षनार्थनिजपादसरोजलीनन् ।।

× × ×

अर्थ—३५

हे अक्षय कुमार के मारने वाले ! हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! संसार का कष्ट दूर करने वाले ! करुणा के सागर ! हे दीनों के नाथ हनूमान जी ! मैं आपत्तियों के समुद्र में डूबता हुआ अत्यंत दीन आपके कमल रूपी चरणों में संलग्न मेरी रक्षा कीजिए ।

श्लोक—३६

नानापराधसहितं शुभकर्महीनन्—
दोषालयंविविधपापमहानदीनम् ।
भक्तैककल्पनगमुक्तिद मोहहर्तस्—
त्वम्पाहि वातज ! जनंवहुरूपधर्तः ।।

× × ×

अर्थ–३६

हे कृपा की मूर्ति हनूमान् जी ! नाना अपराधों से युक्त शुभ कर्मों से रहित दोषों का स्थान अनेक पापों का समुद्र मेरी रक्षा कीजिए–हे वायु नन्दन आप भक्तों के लिए कल्पतरू हैं मुक्ति के देने वाले हैं भक्तों के कल्याण के लिए अनेक रूप धारण करने वाले हैं।

श्लोक–३७

रक्षस्समूहवहुदु:खदघोरनादं–
सर्वेश चाखिलभयापह-पूज्यपादम् ।
संसारवन्धनविनाशन-कामरूपन्–
ध्यामामि देव ! भवत: परमं स्वरूपम् ।।

× × ×

अर्थ–३७

आपका घोरनाद-राक्षसों के समूह को दुख देने वाला हैं आपके चरण कमल समस्त भय को दूर करने वाले हैं आपके समय समय के अनेक स्वरूप संसार के बन्धन को दूर करने वाले हैं हे सर्वेश ! हे देव ! हनूमान् जी मैं आपके परम स्वरूप का ध्यान करता हूं।

श्लोक–३८

दीनार्तरक्षणपरोऽखिलरूपधारी–
पापात्मनान्निखिलपापचयापहारी ।

स्वर्गापवर्गगतिदो जनमानहारी—
वातात्मजो भवतुमेभवतापहारी ॥
× × ×

अर्थ—३८

दीन और दुखी जन की रक्षा में तत्पर-समस्त रूप धारण करने वाले-पापियों के पाप को नाश करने वाले स्वर्ग और मोक्ष की गति को देने वाले अभिमानी मनुष्यों के मान को हरण करने वाले-श्री हनुमान् जी मेरे संसार के ताप हरण करने वाले हों।

श्लोक—३९

वाणीममास्तु भवतो गुणवर्णयित्री—
पूजाविधाननिरतौ सततङ्करौमे।
मन्मानसे चहनुमन् तवमञ्जुमूर्ते—
र्वासोभवेच्च करुणावरुणालयस्य ॥
× × ×

अर्थ—३९

हे हनुमान् जी मेरी वाणी आपके गुणानुवाद में लगी रहे तथा मेरे हाथ आपकी पूजा के विधान में सदा लगे रहें और करुणा के निधान आपकी सुन्दर मूर्ति का वास सदा मेरे मन में रहे।

श्लोक—४०

एकाननश्श्वसनजोवलवुद्धिदाता—
द्वित्र्याननोरघुपतेः पदपद्मयाता।

श्लोक--४०

पञ्चाननश्चचतुराननएत्यदीनान्--
नानाननोऽवतुजनानघकर्मलीनान् ॥

× × ×

अर्थ--४०

एकमुख, दोमुख, तीनमुख, चारमुख व पांचमुख व अनेक मुख धारण करने वाले, वल और बुद्धि के देने वाले, श्री राम जी के चरण कमलों के अनुसार चलने वाले श्री हनुमान जी आकर-पाप-कर्म में लगे हुये दीन जनों की रक्षा कीजिए।

श्लोक--४१

कण्ठे स्रजोमणिगणान् प्रियरामनाम--
शून्यान् विलोक्य मतिमान् लघुतान् पिपेष।
वक्षःस्थलन्ननु विदार्य्य च दर्शयन्तं--
रामाङ्किनङ्कपिमुदारमहम्भजामि ॥

× × ×

अर्थ--४१

अपने गले में मणिमाला को प्रियराम नाम से अङ्कित न देखकर प्रतिमणि को दांतों से शीघ्र पीस डाला तथा अपने हृदय को श्रीराम-नाम से अङ्कित सबको दिखाते हुये उन परम उदार कपि की मैं वन्दना करता हूँ।

श्लोक–४२

यावन्ननाथ भुवने पदपद्मयोश्चेद्-
ध्यानन्न सेवनरतिस्तवनैव पूजा ।
तावन्नदेव करुणारघुनन्दनस्य –
संसारसिन्धुतरणे हनुमन्दयालो ॥

× × ×

अर्थ–४२

हे दयालु हनूमान् जी जब तक संसार में आपके कमलरूपी चरणों का ध्यान व सेवन तथा पूजन नहीं होता है तब तक संसार सागर से पार होने के लिए श्री भगवान् रामचन्द्र जी की कृपा नहीं होगी ।

श्लोक–४३

हे जानकी हृदयमोदकरप्रसन्न !
कैवल्यदीप ! भवतापनिवारकेश ! ।
हे विश्वपावन! मनोजव ! सामगीत !
मांरक्षरक्षहनुमान्! कृपया कृपालो !॥

× × ×

अर्थ–४३

हे जानकी के हृदय को प्रसन्न करने वाले ! हे प्रसन्नचित्त ! हे मोक्ष के दीपक ! संसार के तापों को निवारण करने वाले !

संसार में पवित्र ! मन के समान वेग वाले ! सामदेव से गाने योग्य ! हे कृपामूर्ति ! हनुमान् जी मेरी रक्षा कीजिए।

श्लोक–४४

श्री रामकार्यकरणेधृतनैकवेष !
शक्तौनवेषकलने खलुवागनन्तौ।
जानेकथंहिकुमतिस्तववेषसङ्ख्या-
न्नानास्वरूपधरवातजमाश्रयेऽहम् ॥

× × ×

अर्थ–४४

श्री राम के कार्य करने के लिए अनेक वेष धारण करने वाले! आपके रूपों की संख्या जब शेष और सरस्वती नहीं जानती है तो मन्दमति वाला मैं जान ही क्या सकता हूँ अतः नाना स्वरूप धारण करने वाले करुणा के सागर मैं आपका ही सहारा लेता हूँ।

श्लोक–४५

हे कामयोजन शरीर ! महाल्पकाय!
हे जानकीवरनिधान ! सुतीक्ष्णधीमन्।
मैनाकवन्दितपदाम्वुजभक्तिगम्य !
हे सर्वपापहरपापचयंहराशु ॥

× × ×

अर्थ–४५

हे असंख्य योजन तनुधारी ! स्वल्प से स्वल्प शरीर वाले ! श्री सीता से प्राप्त वर के निधान ! कुशाग्र बुद्धि वाले ! मैनाक पर्वत

से पूजित कमल ! भक्ति से प्राप्त होने वाले ! हे सम्पूर्ण पापों के विनाशक ! मेरे पाप समुदाय को दूर कीजिए ।

श्लोक–४६

हे सद्गतिप्रद ! सुरासुरवन्दनीय!
हे दैत्यकुँम्पन! दिगम्बर शोभनीय ।
हे भक्ति पूर्ण! नखदारित दैवतारे!
दीनेदयाम्मयिविधेहिकलङ्कसारे ॥

× × ×

अर्थ–४६

हे सद्गित को देने वाले ! सुर तथा असुरों के वन्दनीय ! दैत्यों को कपाने वाले ! शिवस्वरूप होने से हे दिगम्बर ! हे शोभाशाली ! हे भक्ति से पूर्ण ! हे नखों से दैत्यों को फाड़ने वाले ! मरुत्तनय महावीर जी ! कलंक की मूर्ति मुझ में दया कीजिए ।

श्लोक–४७

त्वां सर्वमङ्गलयमभवसिन्धुपारम,
दीनार्तहृत्कमलवासमनन्तसारम् ।
देदीप्यमानवपुषन्नयनाभिरामं,
वन्दे प्रशस्तयशसं विपदां विरामम् ॥

× × ×

अर्थ–४७

समस्त मङ्गलमय तथा संसार सागर को पार करने वाले अति वलवान् दीन तथा दुःखी जनों के हृदय कमल में वास करने वाले

प्रकाश युक्त शरीर वाले नेत्रों को प्रिय लगने वाले उज्वल यश वाले, आपत्तिनाशक, श्रीमहावीर की सदा वन्दना करता हूँ।

श्लोक—४८

मार्तण्डमण्डलसमप्रभवुद्धिराशे !
तत्वप्रकाशक ! महौषधमन्त्ररूप
ज्ञानोदधे ! मतिमतांवर सौम्यमूर्ते !
याचे समीरज-तवैवसदावलम्बम् ॥

× × ×

अर्थ—४८

हे सूर्य के मण्डल के सामान कांन्ति वाले ! वुद्धि की राशि ! तत्व के प्रकाश करने वाले ! महोषधि रूप ! महामंत्र स्वरूप ! ज्ञान के समुद्र ! वुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! सौम्यमूर्ति ! हे वायुतनय ! निराश्रय को आश्रय देने वाले हनूमान् जी ! मैं तो आपके चरणों का ही सहारा करता हूँ।

श्लोक—४९

हे तत्वगम्य ! परमेश्वर ! लोकनाथ
कन्दर्पकोटिकमनीयमहेशपूज्य ।
हे वानरोत्तम ! यशस्कर ! सिंहनाद
दौर्भाग्यनाशन ! विनाशय दुःख जालम् ॥

अर्थ—२८

हे तत्वों से जानने योग्य ! परमेश्वर ! संसार के स्वामी ! असंख्य कामदेव की शोभा के समान ! शंकर से पूजनीय ! हे

वानरोत्तम ! यश को बढ़ाने वाले ! सिंह के सामने गर्जन वाले ! हे दौर्भाग्य के नाश करने वाले ! हे अत्यन्त पराक्रमी हनूमान् जी ! मेरे समस्त दु:खों को दूर कीजिए ।

श्लोक–५०

हे जानकीशपदपद्मपरागराग
रक्ताञ्जनेयरजनीचरमानहर्तः ।
हे राम पावनयशोमृतपानमत्त !
मामुद्धरस्व हनुमन् ! भवसिन्धुमग्नम् ।।

× × ×

अर्थ–५०

श्री राम के चरण कमल धूलि में आनन्द प्राप्त करने वाले ! राक्षसों के मान मर्दन करने वाले ! श्री राम के पवित्र यशरूपी अमृत के पान में सदा मत वाले ! संसार सागर के पार करने में जहाज रूप ! माता अञ्जना के दयालु पुत्र ! हनुमान् जी ! मेरा उद्धार कीजिए ।

श्लोक–५१

हे मेघनादमखनाशकरातिवेग !
लङ्काविभञ्जनशिवप्रिय ! पिङ्गनेत्र ।
हे काममूर्तिधर ! वेद पुराणविज्ञ !
विद्याधिनाथ । पवनात्मज ! रक्षदीनम् ।।

× × ×

अर्थ–५१

मेघनाथ के गर्व को नाश करने वाले ! अति वेग वाले ! लंका नगरी को नष्ट करने वाले, शंकर जी के प्रिय! पिङ्गल नेत्र वाले ! शिव की मूर्ति धारण करने अर्थात साक्षात शिव स्वरूप ! वेदपुराण तथा सम्पूर्ण विद्याओं को जानने वाले हैं अञ्जनातनय! इस दीन की रक्षा कीजिये ।

श्लोक–५२

हे केसरिप्रिय ! नखायुध ! दन्तशस्त्र !
सुग्रीवनीलनलकाङ्गदसेव्यमान ।
हे स्वर्णकुण्डलसुमंडितकर्णयुग्म !
त्वाम्भावयामिपवमानसुतङ्कपीशम् ।।

× × ×

अर्थ–५२

केसरी के परम प्रिय पुत्र ! नख एवं दन्त ही आपके परम आयुध तथा अस्त्र हैं, सुग्रीव नील नल अङ्गदादिक पीश्वरों से सेवित ! सुवर्ण के कुण्डलों से सुशोभित कर्ण वाले ! दीनों के सदा आधार भूत ! पवन तनय ! दया के स्वरूप हनुमान् जी ! मैं तो सदा आपका चिन्तन करता रहता हूँ ।

श्लोक–५३

स्तोत्रञ्च वेदनयनाभ्रसुलोचनेऽब्दे
पूर्णंसितेकुजदिनेनवमीनभस्ये ।

श्री वायुसुनु पदयोश्च समर्पितन्तद्
भक्त्यासुमाञ्जलिनिभंशिवशास्त्रिणावै ॥

× × ×

अर्थ–५३

शिवदत्त शास्त्री ने संवत २०२४ भाद्र सुदी नवमी मङ्गलवार को पूर्ण हुई पुष्पाञ्जलि के समान यह हनुमत्स्तुति भक्त शिरोमणि, वायुतनय, अञ्जनानन्दंन श्री महावीर जी के चरण कमलों में समर्पण की।

श्लोक–५४

स्तोत्रञ्चयःशिवकृतंहिसमीरसूनो
र्भक्त्या पठेदहनुमतः करुणावतःसः ।
प्राप्नोतिसौख्यमतुलङ् :कृपयाशुलोके
लोकञ्चयाति रघुवंशविभूषणस्य ॥

(इति श्रीपं०शिवदत्तशास्त्रिणाविरचितंहनुमत्स्तोत्रं समाप्तम्)

× × ×

अर्थ–५४

जो मनुष्य इस शिवदत्तशास्त्री से रचित स्त्रोत का पाठ भक्ति पूर्वक करेगा वह कृपा की मूर्ति सदा प्रसन्न मुख–श्री हनुमान् जी की कृपा से समस्त सुख को प्राप्त करेगा और मरने पर श्री मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के धाम को प्राप्त करेगा।

इति श्री पं० शिवदत्त शास्त्री से रचित हनुमान् जी
के स्त्रोत का अर्थ समाप्त ॥

————

परिशिष्ट भाग

परिशिष्ट भाग में प्रकाशित सभी विषय श्रीशिवस्तोत्र व श्रीहनुमत्स्तोत्र आदि अनेक स्तोत्रों के रचयिता-प्रवक्ता-ग्रन्थलेखक-व्याकरण-साहित्य-ज्यौतिष-कर्मकाण्ड आदि के सुयोग्य विद्वान्-परम-पूज्य परमादरणीय श्रद्धेय श्रीगुरुदेव १०८ श्रीमान् पं० शिवदत्त शास्त्री मु० सलेमपुर पो० अछल्दा जि० इटावा निवासी जी से सप्रमाण प्राप्त किये थे जिनमें कुछ ग्रन्थों के नाम आगे लिखे हैं। सावर मन्त्रों की प्राप्ति गुरुपरम्परा क्रम से हुई थी जिनमें से कुछ ही अनुभूत सिद्ध मन्त्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

निवेदकः–

सूरज प्रसाद गुप्त
बहीवाले
फोन नं० ६५५०२

पुरानाजनरलगंज
कानपुर–१

परिशिष्ट के आधारभूत कतिपय ग्रन्थ

१- शारदातिलक
२- मन्त्रमहोदधि
३- पुरश्चरण चन्द्रिका
४- पुरश्चरण चन्द्रिका
५- तन्त्रराज
६- तन्त्रसार
७- यामलत्रय
८- यन्त्रचितामणि
९- यंत्रसार संग्रह
१०- वैशम्पायनसंहिता
११- वृहत्पाराशरचन्द्रिका
१२- गौतमसंहिता
१३- अगत्स्य संहिता
१४- नारदसंहिता
१५- संस्कारभास्कर
१६- महावर्ण
१७- देवीपुराण
१८- मत्स्यपुराण
१९- अग्निपुराण आदि

सङ्केत—कुछ विषय गुरु परम्परागत प्राप्त किये थे।

परिशिष्ट विषयः

भगवान् शिवके प्रधान दो मन्त्र हैं १ षडक्षर–दूसरा पञ्चाक्षर। शिवपुराण में दोनों मन्त्रों का विशेष महत्व वर्णन किया है–

प्रमाण–अरुद्रो वा सरुद्रो वा सकृत्पञ्चाक्षरेणवा ।
अपूज्यः पूजितोवापि मूढोवा मुच्यतेनरः ॥
षडक्षरेणवा देवि तथा पञ्चाक्षरेणवा । इत्यादि

अर्थ–

किसी ने चाहे दीक्षा ली हो चाहे न ली हो-पतति हो अथवा मूर्ख-यदि श्रद्धापूर्वक एकवार भी (ओं नमः शिवाय) इस षडक्षर मन्त्र का अथवा (नमः शिवायः) इस मन्त्रका जप करता है वा पूजन करता है तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है।

इसी प्रकार षडक्षर राम मन्त्र का बड़ा महत्व शास्त्रों में वर्णित है।

प्रमाण–सर्वेषांराममन्त्राणाम्मन्त्रराज:षडक्षरः ।
तारकंब्रह्मवेदोक्तं तेनपूजा प्रशस्यते ॥ (अ०सं० ३३अ०)

अर्थ–

आगे सर्वसाधारण जनता के लिए कुछ देवताओं के मन्त्र लिखे जा रहे हैं-उनका जप करने से सर्वाभीष्ट सिद्धि प्राप्ति करने में कोई भी सन्देह नहीं है।

शिवमन्त्र

(ॐ नमःशिवाय) वा (नमःशिवाय)

राममन्त्र

(श्री रामायनमः) वा (रारामायनमः) वा (ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रां) वा(राम) वा(रामचन्द्र) वा (हुँ जानकी वल्लभायस्वाहा) वा (श्री रामजयरामजयजयराम)

सन्तानगोपालमन्त्र भेदप्रकारः

(१)

ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं जीं ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते। देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः स्वः भुवः भूः ओं जीं ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ॥

"अथवा" (२)

"ॐ" क्ली देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते।
देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः क्लीं ओम् ॥

इत्यादि मतभेद हैं।

"अथवा" (३)

"ॐ" देवकीसुतगोविन्द वासुदेवजगत्पते।
देहि में तनयङ्कृष्ण त्वामहंशरणङ्गतः।

विन्ध्यवासिनी देवी का मन्त्र

ॐ उत्तिष्ठ पुरुषिकिं स्वपिषिभयम्मेसमुपस्थितम्।
यदिशक्यमशक्यंवा तन्मेभगवतिशमयस्वाहा ॥

दुर्गादेवीमन्त्र

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः ॥

महामृत्युञ्जयमन्त्र (त्र्यम्वकमन्त्र)

ॐ हौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्वकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् । ऊर्वारुकमिववन्धनान् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्-भूर्भुवः स्वरों जूंसः हौं ॐ ।

संकेत--महामृत्युञ्जय मन्त्र में कुछ लोग (ॐ) तीन बार लगाते हैं ।

मृत्युञ्जयमन्त्र

त्र्यम्वकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिववन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥

अन्नपूर्णामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति महेश्वरि अन्नपूर्णेस्वाहा

कुवेरमन्त्र

ॐ यक्षायकुवेरायवैश्रवणायधनधान्याधिपतयेधनधान्य-समृद्धिम्मे देहिदापयस्वाहा ।

कृष्णमन्त्र

क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा । वा (क्लीं कृष्णक्लीं)वा(क्लींकृष्णायगोविन्दाय गोपीजनवल्लभायस्वाहा ।) वा (ओंनमोभगवतेवासुदेवाय)

कार्तवीर्यमन्त्र

ओं फ्रों ची क्लीं भ्रं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनायनमः ।

संकेत इस मन्त्र के जप से नष्ट वस्तु प्राप्त हो जाती है।

लक्ष्मीमन्त्र

ओं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यैनमः ।

महालक्ष्मीमन्त्र

ओं श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै नमः (स्वाहा)

वागीश्वरी मन्त्र

ह्रीं वद वद वाग्वादिन्यैस्वाहाह्रीं ।

वगलामुखीमन्त्र

ओं ह्लीं वगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वांकीलय वुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा ।

वटुकभैरवमन्त्र

ॐ ह्रीं वटुकाय, आपदुद्धरणाय कुरुकुरु वटुकाय ह्रीं ।

नारायणमन्त्र

ओंनमोनारायणाय ।

गङ्गामन्त्र

ऐं हिलिहिलि मिलिमिलि गङ्गे मां पावय पावय स्वाहा ।

महाकालीमन्त्र

(फ्रेंकरिण्याम्) वा (ॐ फ्रें फ्रें हूँ हूँ पशुगृहाण हुँ फट् स्वाहा । वा) ॐ हर हर स्तम्भस्तम्भ कील कील स्वाहा ।

महागणपतिमन्त्र

(१) ॐ श्री ह्रींग्लौं गंगणपतये वरवरद सर्वंजनं मे वशमानयस्वाहा ।

(२) "ॐ वक्रतुंण्डायहुँ" इतिवा गणेशमन्त्रः

(३) वक्त्रतुण्डैकदंष्ट्रायक्लोंह्रीं श्रीं गंगणपतयेवरवरदसर्वजनंमे वशमानयस्वाहा । यह त्रैलौक्य वश करने का मन्त्र है (मन्त्रमहोदधौ)

उच्छिष्टगणपतिमन्त्र

ॐ हस्तपिशाचि लिखे स्वाहा ।

भुवनेश्वरीमन्त्र

(ह्रीं) वा (ऐं ह्रीं श्रीं)

॥ इति देवताओं के मन्त्र समाप्त ॥

सङ्केत यहां से आगे कुछ देवताओं की गायत्री लिखी जायगीं ।

रुद्रगायत्री—तत्पुरुषायविद्महे महादेवायधीमहि तन्नोरूद्रः प्रचोदयात् ।

महालक्ष्मीगायत्री–महालक्ष्म्यैविद्महे महाश्रियै धीमहितन्नः श्रीःप्रचोदयात् ।

हनुमद्गायत्री–हनूमतेविद्महे आञ्जनेयाय धीमहि तन्नोवीरः प्रचोदयत् ।

दुर्गागायत्री–कात्यायन्यैविद्महे कन्याकुमार्य्यै धीमहि तन्नो दुर्गाप्रचोदयात् ।

वागीश्वरीगायत्री–ऐं वागीश्वर्य्यैविद्महे क्लींकामेश्वर्य्यै धीमहि । सौस्तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ।

वगलामुखीगायत्री–वगलामुख्यैविद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि । तन्नो देवीः प्रचोदयात् ।

अन्नापूर्णागायत्री–भगवत्यैविद्महे माहेश्वर्य्यै धीमहि तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ।

रामगायत्री–दाशरथयेविद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ।

रविगायत्री–सप्ततुरगायधीमहि सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नो रविः प्रचोदयात्

कृष्णगायत्री–दामोदरायविद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ।

ज्वरगायत्री—भस्मायुधायविद्महेऐंक्लीं एकदंष्ट्राय धीमहि
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् ।

॥ इति कुछ देवताओं की गायत्री विषय समाप्त ॥

॥ मन्त्रों के विषय पर संक्षिप्त विवेचन ॥

शारदातिलक में मन्त्र तीन प्रकार के वर्णन किये हैं—पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसलिङ्ग ।

१—जिस मन्त्र के अन्त में हुंफट् हो-उसे पुरुष मन्त्र अर्थात् पुल्लिङ्ग कहते हैं ।

२—जिस मन्त्र के अन्त में स्वाहा हो उस मन्त्र को स्त्री मन्त्र स्त्री लिङ्ग कहते हैं ।

३—जिस मन्त्र के अन्त में नमः हो उस मन्त्र को नपुंसक मन्त्र अर्थात् नपुंसक लिङ्ग कहते हैं ।

मन्त्र महोदधि में भी इसका विवेचन सुचारु रीति से किया गया है ।

१—जिस मन्त्र के अन्त में (वषट्) हो फट् हो उसे पुरुष मन्त्र जानना चाहिए ।

२—जिस मन्त्र के अन्त में (वौषट्) व (स्वाहा) हो उसे स्त्री मन्त्र जानना चाहिये ।

३—जिस मन्त्र के अन्त में (नमः) हो उसे नपुंसक मन्त्र जानना चाहिये । कर्म भेद से मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए जैसे-वशीकरण

उच्चाटन आदि में पुरुष मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये। साधारण छोटे कर्म के लिये व रोगनाशक आदि के लिये स्त्री मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये। अभिचार में नपुंसक मन्त्र का प्रयोग करना चाहि। शारदातिलक व मन्त्रमहोदधि में विशेष विस्तार से लिखा है।

मन्त्रों के भेद

१ जाग्रत २ सुषुप्त ३ मित्र ४ शत्रु ५ सौम्य ६ क्रूर ७ अतिक्रूर ८ छिन्न ९ रुद्र १० शक्तिहीन ११ पराङ्मुख १२ वधिर १३ नेत्र-हीन १४ दग्ध १५ त्रस्त १६ मलिन १७ मदोन्मत्त १८ मूर्छित १९ प्रध्वस्त २० बालक २१ कुमार २२ युवा २३ प्रौढ़ २४ वृद्ध २५ केकर २६ कूट ये मन्त्रों के भेद हैं-दुष्ट मन्त्रों को त्याग करके शुभ मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। इनका विस्तार नारदपञ्चरात्र आदि ग्रन्थों में है।

मन्त्रों में अक्षरों के अनुसार ५ भेद

१—एक अक्षर वाला मन्त्र "पिण्ड" कहलाता है।

२—दो अक्षर वाला मन्त्र "कर्तरी" कहलाता हैं।

३—तीन अक्षर से नव अक्षर तक के मन्त्र को "वीज" कहना चाहिये।

४— दश अक्षर से वीस अक्षर तक के मन्त्र को "मन्त्र"

५—वीस अक्षर से अधिक अक्षर वाला मन्त्र "मालामन्त्र" कहलाता है।

"नारदपञ्चरात्र द्वितीय रात्र के ७ वें अध्याय में तथा" मन्त्रमहोदधि और शारदातिलक में भी वर्णन आया है।

पुल्लिङ्ग आदि मन्त्र विचार

मन्त्राः पुन्देवताज्ञेया विद्या स्त्री देवता स्मृताः ।
पुंस्त्रीनपुंसकात्मानो मन्त्रा सर्वेसमीरिताः ॥
पुम्मन्त्राहुंफडन्ताः स्युर्द्विठान्ताःस्युःस्त्रियोमताः ।
नपुंसकः नमोन्ताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा ॥
इतिशारदा तिलके ।

स्त्रीपुंनपुंसकाः प्रोक्तामनवस्त्रिविधावुधैः ।
वषडन्तन्ताः फडन्ताश्च पुमांसो मनवःस्मृताः ॥१॥
वौषट् स्वाहान्तगानार्यो हुंनमोन्ता नपुंसकाः ।
इतिमन्त्रमहोदधौ ।

पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग भेदानुसार मन्त्र

१-जिस मन्त्र के अन्त में=वषट्-फट्-हुं फट हों वह पुल्लिङ्ग कहलाता है।

२-जिस मन्त्र के अन्त में=वौषट्-स्वाहा हों वह स्त्रिलिङ्ग कहलाता है।

३-जिस मन्त्र के अन्त में=नमः हो वह नपुंसकलिङ्ग कहलाता है।

(ओं शब्द का प्रयोग किन मन्त्रों में नहीं करना चाहिये)

वाक्चैव कामः शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते ।
तदाद्येषु च मन्त्रेषु प्रणवन्नैव योजयेत् ॥१॥

अर्थ –

जिन २ मन्त्रों के आदि में वाग्वीज 'ऐं' कामवीज 'क्लीं' शक्तिवीज 'ह्रीं' 'श्रीं' हो तो उन मन्त्रों में 'ॐ' कार नहीं लगाना चाहिये आदि में—ये वीज स्वयं ॐकार रूप हैं ।

अतः नवार्णमन्त्र में 'ओम्' नहीं लगाना चाहिये ।

मन्त्रों में ओंकार लगाने का नियम

प्रणवाद्यङ् गृहस्थानान्तच्छून्यन्निष्फलम्भवेत् ।
आद्यन्तयोर्वनस्थानांयतीनाम्महतामपि ॥१॥

अर्थ—

गृहस्थ को मन्त्र के आदि में प्रणव 'ओं' लगाना चाहिये विना प्रणव के मन्त्र जपना निरर्थक होता है । वानप्रस्थ तथा यती आदि महात्माओं को आदि तथा यन्त्र के अन्त में इस प्रकार दो बार 'ओं' लगाना चाहिये यथा "ओंनमःशिवाय शिवायनमः ओम्" अथवा ओं नमः शिवाय ओम् ।

जपे होमे तथा दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि ।
अशून्यन्तुकरङ् कुर्यात् सुवर्णरजतैः कुशैः ॥

अर्थ-

जपमें-होममें-दानमें-वेदपाठ आदि के स्वाध्याय में तथा पितृ-कर्म में अर्थात् तर्पण व श्राद्ध आदि में सुवंण-चांदी-कुश इन तीनों से अथवा इनमें से किसी भी एक से युक्त हस्त अवश्य होना चाहिये अन्यथा सब कर्म निष्फल हो जाता है। आशय यह है कि पवित्री कुश की हो अथवा सोने या चांदी का छल्ला या अगूंठी युक्त हस्त से कार्य करना चाहिये।

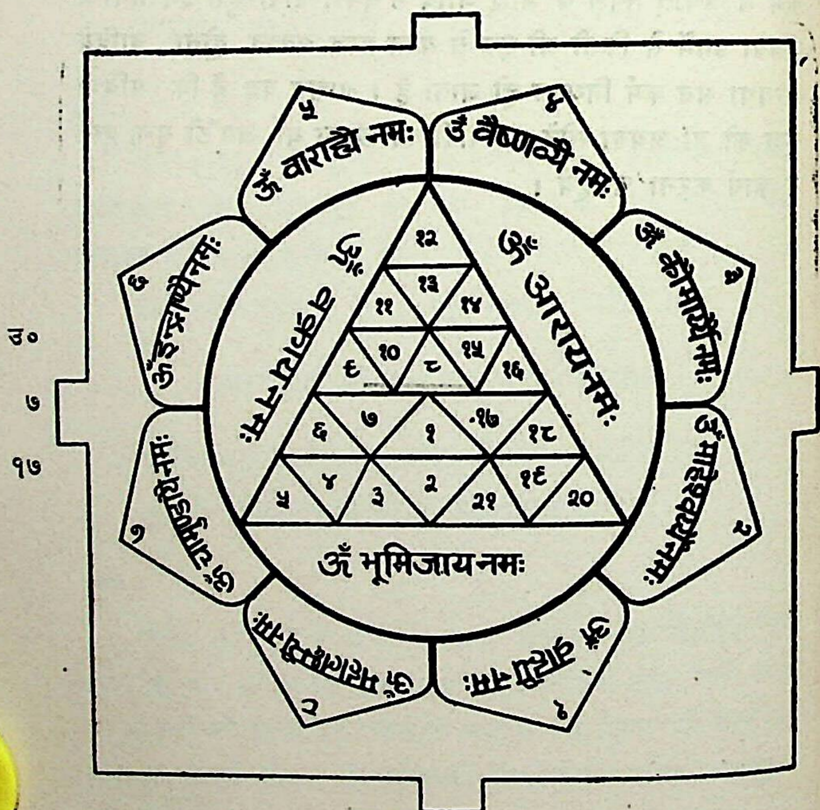
पू०

श्री मङ्गलयन्त्रम्

१८ १९ ११ १२

८ ९ १ २

उ० ७ १७



६ ५ १० १४

१६ १५ २० ४

प०

तान्त्रिकमङ्गल का मन्त्रः "ॐ हां हं सः खं खः"

वैदिक मङ्गल मन्त्र का—ॐ अग्निर्म्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति ॥

संकेत—इस मङ्गल यन्त्र को तांबे की थाली में लाल चन्दन से अनार की कलम से लिखकर पूजनादि करने से सभी प्रकार की विपत्तियां नष्ट होकर समस्त सुख प्राप्त होते हैं। तांबे के पत्र पर कारीगर द्वारा खुदाकर भी यन्त्र बनाया जा सकता है यह यन्त्र सकल सौख्यप्रद है।

मङ्गलयन्त्रदेवता

१—ॐ मङ्गलायनमः ॥
२—ॐ भूमिपुत्रायनमः ॥
३—ॐ ऋणहर्त्रे नमः ॥
४—ॐ धनप्रदायनमः ॥
५—ॐ स्थिरासनायनमः ॥
६—ॐ महाकायायनमः ॥
७—ॐ सर्वकामावरोधकायनमः ॥
८—ॐ लोहितायनमः ॥
९—ॐ लोहिताङ्गायनमः ॥
अथवा (लोहिताक्षायनमः)
१०—ॐसामगानाङ्कृपाकराय नमः ॥
११—ॐ धरात्मजायनमः ॥
१२—ॐ कुजायनमः ॥
१३—ॐ रक्तायनमः ॥
अथवा (भौमायनमः)
१४—ॐ भूमिदायनमः ॥
१५—ॐ भूमिनन्दनायनमः ॥
१६—ॐ अङ्गारकायनमः ॥
१७—ॐ यमायनमः ॥
१८—ॐ सर्वरोगापहारकायनमः ॥
१९—ॐ वृष्टिकर्त्रे नमः ॥
अथवा (सृष्टिकर्त्रे नमः)
२०—ॐ वृष्टिहर्त्रे नमः ॥
२१—ॐ सर्वकामफलप्रदायनमः ॥

इतित्रिकोण के मध्ये में २१ देवता की स्थापनादि किया।

त्रिकोण के बाहर ३ देवताओं की स्थापना

१—ॐ वक्रायनमः ।।
२—ॐ आरायनमः ।।
३—ॐ भुमिजायनमः ।।

त्रिकोणकेबादअष्टदलोकेमध्य-में देवतास्थापनादिकर्म

१—ॐ ब्राह्म्यैनमः ।।
२—ॐ माहेश्वर्य्यैंनमः ।।
३—ॐ कौमर्य्यैंनमः ।।
४—ॐ वैष्णव्यैनमः ।।
५—ॐ वाराह्यैनमः ।।
६—ॐ इन्द्राण्यैनमः ।।
७—ॐ चामुण्डायैनमः
८—ॐ महालक्ष्म्यैनमः

भूपुर में दशदिक्पालों का स्थापनादि

१—ॐ लंइन्द्रायनमः ।
२—ॐ अंअग्नयेनमः ।।।
३—ॐ यंयमायनमः ।।
४—ॐ निंनिर्ऋतयेनमः ।।
५—ॐ वंवरुणायनमः ।।
६—ॐ वांवायेनमः ।।
७—ॐकुं कुवेरायनमः ।।
८—ॐ ईंईशानायनमः ।।
९—ई०पू०मध्ये व्रंब्रह्मणेनमः।।
१०—प०नि०मध्ये० ॐअंअन्ताय-नमः ।।

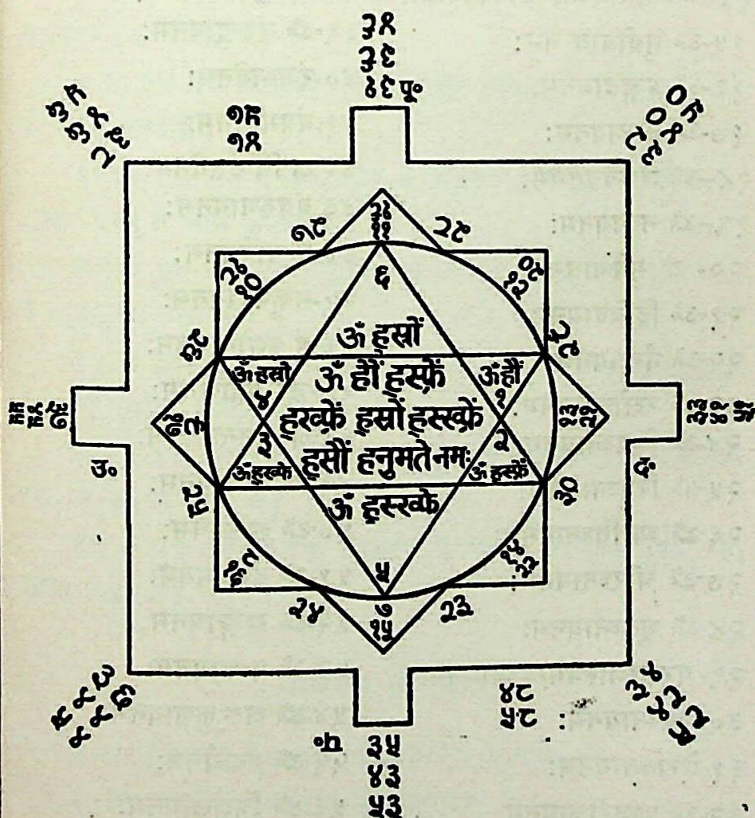
दिग्पालों के बाद—दिग्पालों के आयुधों का स्थापनादि

११—ॐ वजायनमः ।।
१२—ॐशक्तयेनमः
१३—ॐ दण्डायनमः ।।
१४—ॐ खड्गायनमः ।
१५—ॐ पाशायनमः ।।
१६—ॐ अङ्कुशायनमः ।।
१७—ॐ गदायैनमः ।।
१८—ॐ त्रिशूलायनमः ।।
१९—ॐ पद्मायनमः ।।
२०—ॐ चक्रायनमः ।।

इति मङ्गल यंत्र के देवताओं का स्थापनादि ।

श्रीमन्हनुमन्त्रपूजायन्त्रम् नं० (१)

(१) हौं (२) ह्स्फें (३) ह्ख्फें (४) ह्स्रौं
(५) ह्सौं (६) ह्स्ख्फें ।



७-ॐ रामभक्तायनमः । ९-ॐ कपिराजायनमः ।

८-ॐ महातेजसेनमः । १०-ॐ महावलायनमः ।

११-ॐ द्रोणाद्रिहारकायनमः
१२-ॐ मेरुपीठकार्चनकारकायनमः
१३-ॐ दक्षिणाशाभास्करायनमः
१४-ॐॐसर्वविघ्ननिवारकायनमः
१५-ॐ सुग्रीवाय नमः
१६-ॐ अङ्गदायनमः
१७-ॐ नीलायनमः
१८-ॐ जाम्ववतेनमः
१९-ॐ नलायनमः
२०- ॐ सुषेगायनमः
२१-ॐ द्विविदायनमः
२२-ॐ मैन्द्रायनमः
२३-ॐ रक्षोघ्नायनमः
२४-ॐ विषघ्नायनमः
२५-ॐ रिपुघ्नायनमः
२६-ॐ व्याधिघ्नायनमः
२७-ॐ चौरघ्नायनमः
२८-ॐ भूतघ्नायनमः
२९- परशस्त्रास्त्रमन्त्रघ्नायनमः
३०-भयघ्नायनमः
३१-ऐरावतायनमः
३२-ॐ पुण्डरीकायनम
३३-ॐ वामनायनमः
३४-ॐ कुमदायनमः
३५-ॐ अञ्जनायनमः
३६-ॐ पुष्पदन्तायनमः
३७-ॐ सार्वभौमायनमः
३८-ॐ सुप्रतीकायनमः
३९-ॐ लंइन्द्रायनमः
४०-रंअग्नयेनमः
४१-यंयमायनमः
४२-क्षं निर्ऋतयेनमः
४३ वंवरुणायनमः
४४-यं वायेवनमः
४५-संकुवेरायनमः
४६-हं ईशानायनमः
५७-ह्रीं ब्रह्मणेनमः
४८-अं अनन्तायनमः
४९-ॐ वज्रायनमः
५०-ॐ शक्तयेनमः
५१-ॐ दण्डायनमः
५२-ॐ खड्गायनमः
५३-ॐ पाशायनमः
५४-ॐ अङ्कुशायनमः
५५-ॐ गदायैनमः
५६-ॐ त्रिशूलायनमः
५७-ॐ पद्मायनमः
५८-ॐ चक्रायनमः ।

विशेष विवरण

१ मध्य में हनुमान् जी का प्रधान मन्त्र है।

१ से ६ अङ्कवाले नामों को प्रथमावरण में नाम जानना चाहिए–(६ कोणों में)

७ से १४ तक द्वितीयावरण में नाम जानकर पूजनादि कार्य करे–(८ दलों में)

१५ से २२ तक तृतीयावरण में जानकर पूजनादि कार्य करे–(अष्ट दलों में आगे की तरफ)

२३ से ३० तक चतुर्थआवरण में जानना चाहिए–(अष्ट दलों के बाहर सन्धियों में)

३१ से ३८ तक पञ्चम आवरण में जानना चाहिए–(भुपुर रेखा में पूर्वादि क्रम से)

३९ से ४८ तक षष्ठ आवरण में जानना चाहिये–(भूपुर द्वितीय रेखा में ऊपरी भाग में)

४९ से ५८ तक सप्तम आवरण में जाना चाहिए–भूपुर की तृतीय रेखा में)

आवरण विवेचन

१–षट्कोणों में पूजनादि प्रथमावरण में जानें।

२–अष्टदलों में पूजनादि द्वितीयावरण में।

३–अष्टदलों के अग्रभागों में पूजनादि तृतीयावरण में।

४–दलों की सन्धि भागों में चतुर्थावरण समझना चाहिए।

५--भूपुर प्रथम रेखा में पूर्वादि क्रम से पूजनादि पञ्चम आवरण में जाने।

६--भूपुर द्वितीय रेखा में पूर्वादिक्रम से पूजनादि को पष्ठ आवरण में।

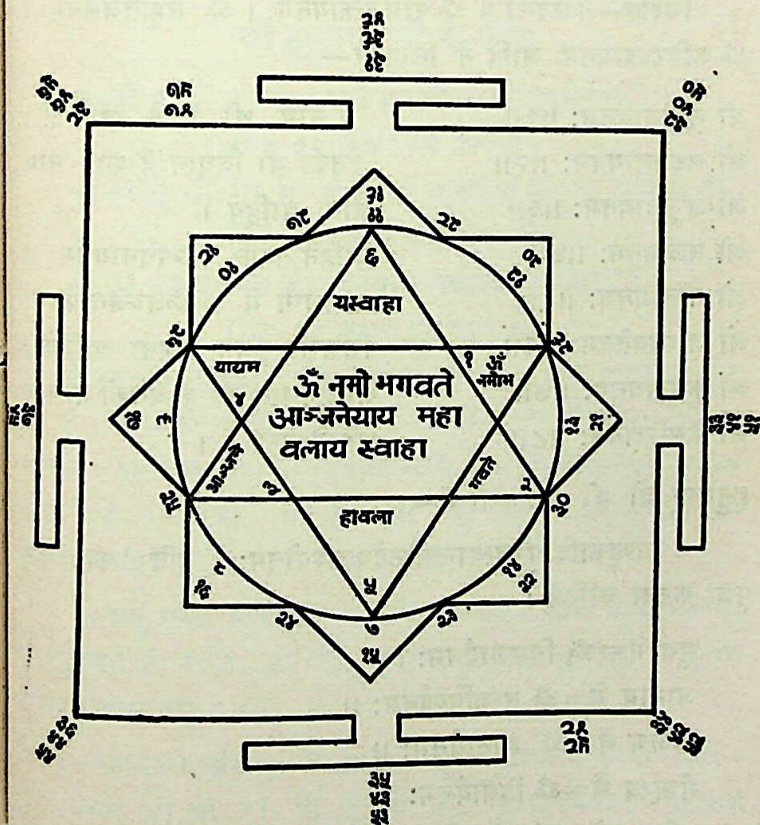
७--भूपुर तृतीय रेखा में पूर्वादिक्रम से पूजनादि को सप्तमआवरण में समझना चाहिये।

संकेत--प्रत्येक यन्त्र पूजन में सर्वत्र यही क्रम रहेगा--देवता पृथक-पृथक् होंगे। भूपुर की तीनों रेखाओं के तीनों आवरणों के देवता प्राय: सभी यन्त्रों में वही रहेंगे परिवर्तन नहीं होते हैं। अर्थात् दशदिक्पाल-दशदिक्पालों के आयुद्ध सभी यंत्रों में एक ही रहेंगे-किसी २ यंत्र में दश दिग्गजों का भी लेख मिलता है दिग्गज भी सभी यंत्रों में समान ही रहते हैं। ये सब दिक्पाल व दिक्पालों के आयुध व दिग्गज आदि यंत्रके बाहर भूपुर रेखा में क्रमश: रहेंगे। प्रथम दिग्गज-दिक्पाल-दिग्पालों के आयुध।

प्रत्येक देवता के पूजन पाठ जप आदि में यदि प्रत्यक्ष मूर्ति न हो तो यन्त्र में पूजन आदि करके-जप व पाठ करना चाहिए। यंत्र बनाने का समय आदि न हो तो मूर्ति का ध्यान करते हुये जप व पाठ करें। देवता के स्वरूप का अवश्य ध्यान करते रहना चाहिये। यंत्र हो अथवा न हो जैसी सुविधा हो श्रद्धा व प्रेम से पाठ आदि हो सके वही करे-कलियुग में केवल नाम का ही विशेष महत्व है--विस्तार पूर्वक पूजनादि विधान अपनी २ शक्ति अनुसार है। भोजपत्र में अनार की कलम से लाल चन्दन से यंत्र लिख कर पूजन आदि करके धारण करने से मनोऽभीष्ट सिद्ध प्राप्त होती है।

श्रीहनुमन्मन्त्रपूजायन्त्रम् नं० (२)

मन्त्रमहौदघो 'गारुडेततन्त्रे'



संकेत—ओं नमोभगवते आञ्जनेयाय महावलाय स्वाहा, इस
८ अक्षरवाले मन्त्र का यंत्र विलकुल पूर्व यंत्र की तरह बनेगा—
वल षट्कोण में विशेषता रहेगी वह पूर्वोक्त यंत्र यहां देख लीजिये

शेष सभी क्रम पूर्व यंत्रवत् जानिये। नं० १ वाले यंत्र तुल्य-यंत्र बनेगा।

विशेष—अष्टदलों में ॐ रामभक्तायनमः। ॐ महातेजसेनमः। ॐ कपिराजायनमः आदि न लिखकर—

ओं सुग्रीवायनमः ॥१॥
ओं लक्ष्मणायनमः ॥२॥
ओं अङ्गदायनमः ॥३॥
ओं नलायनमः ॥४॥
ओं नीलायनमः ॥५॥
ओं जाम्बवतेनमः ॥६॥
ओं कुमुदायनमः ॥७॥
ओं केसरिणेनमः ॥८॥

ये नाम भी लिखे जाते हैं। इनका भी विधान है कोई नाम होना चाहिये। दाहिने तरफ ॐपवनायनमः। वामभाग में =ॐअञ्जनायैनमः लिखकर पूजन करना चाहिये। श्री हनुमान् जी के अनेकों मन्त्र व अनेकों यन्त्र हैं।

हनुमान् जी की पीठ पूजा में—

मण्डूकादि परतत्वान्तपीठदेवताभ्योनमः, इति कह कर पूजा करना चाहिये।

पूर्व में=ॐ विमलायैनमः।
आग्नेय में=ॐ उत्कर्षिण्यैनमः॥
दक्षिण में=ॐ ज्ञानायैनमः॥
नैर्ऋत्य में=ॐ प्रियायैनमः॥
पश्चिम में=ॐ योगायैनमः॥
वायव्य में=ॐ प्रह्वयैनमः॥
उत्तर में=ॐ सत्यायैनमः॥

ईशान में—ॐ ईशानायैनमः।
मध्य में—ॐ अनुग्रहायैनमः॥
संकेत—पीठ पूजादि आवरण पूजा के पूर्व करनी चाहिये।

श्री हनुमान् जी के मन्त्र

१—ह्रौं ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमतेनमः॥
(यह १२ अक्षर का मन्त्र है)
२—ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्स्फ्रें ह्ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं।
(यह ११ अक्षर का मन्त्र है)
३—ॐ नमोभगवते आञ्जनेयाय महावलाय स्वाहा।
(यह १८ अक्षर का मन्त्र है)

संकेत—श्री हनुमान् जी के दोनों ही यंत्र सुन्दर सकल अभीष्ट प्रद हैं। तांवे की थाली में रक्त चन्दन से यंत्र लिखकर अथवा कारीगर द्वारा खुदवाकर—पूजनादि करने से सकल कामनायें प्राप्त होतीं हैं। यंत्रों में देवताओं का पूजन अङ्कानुसार ही करना चाहिये।

३—शत्रु संकट निवारण के लिए, ॐ पूर्व कपि मुखायपञ्च-मुखहनुमते टं, टं, टं, टं, टं, सकलशत्रुसंहरणायस्वाहा। (पंच मुखहनुमत्कवचम् २७)

४—महामारी, अमङ्गल-तथाग्रहदोष एवं भूतेप्रतादि नाशके लिये।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओंनमोभगवते महावल पराक्रमाय भूतप्रेतपिशाच व्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनी यक्षिणीपूतना मारी-महामारी राक्षस भैरव वेताल ग्रहराक्षसादिकान् क्षणेन हन-

हनभञ्जय भञ्जय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वर रुद्रावतार ॐ हुं फट् स्वाहा। ॐ नमोभगवते हनुमदाख्यायरुद्रायसर्वं दुष्ट मुखस्तम्भनं कुरुकुरुस्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ठं ठं ठं फट्स्वाहा।

(५) प्रेतवाधा के लिए मन्त्र

ॐ दक्षिणमुखायपञ्चमुखहनुमतेकरालवदनाय नरसिंहाय ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूँ, ह्रैं ह्रौं ह्रः, सकलभूतप्रेत दमनाय स्वाहा।

(पञ्चममुखहनुमत्कवचम् २८)

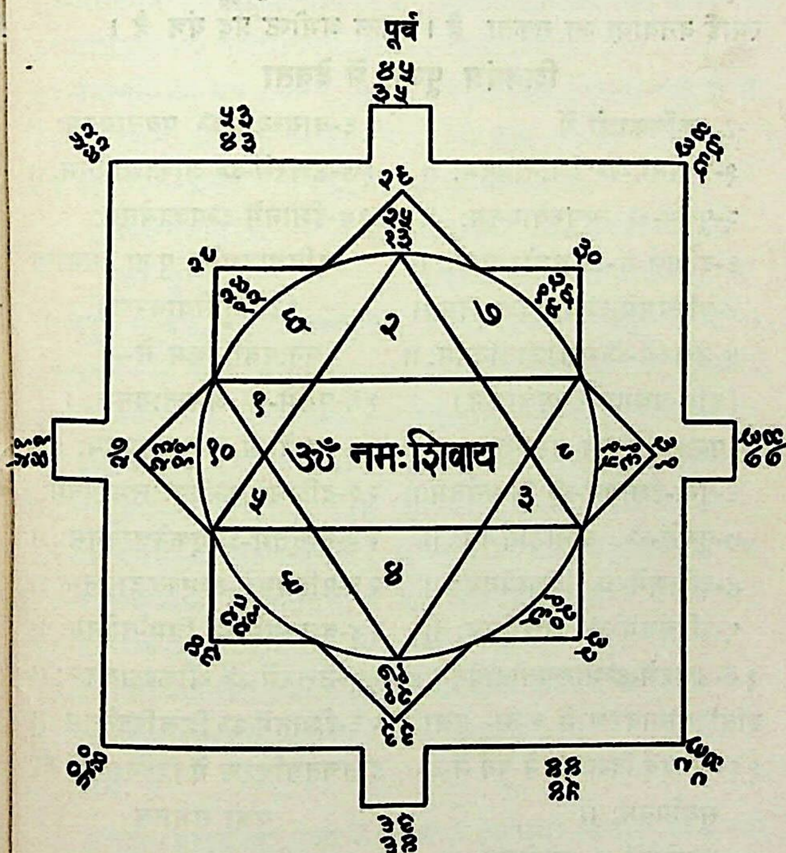
(६) विष उतारने का मन्त्र

ॐ पश्चिममुखाय गरुडासनाय पञ्चमुखहनुमते–मं, मं, मं, मं, मं, सकलविषहरायस्वाहा।

(पञ्चमुखहनुमत्कवचम् २९)

————

श्री शिवयन्त्र



संकेत–इस शिव यन्त्र को सफेद चन्दन से अनार की कलम से लिखकर देवताओं का पूजनयन्त्र में अङ्कानुसार ही करना चाहिये–

यह मंत्र भी तांबे के पत्र पर कारीगर द्वारा खुदवा कर सदा के लिए स्थाई बनवाया जा सकता है। सकल अभीष्ट प्रद यंत्र है।

शिवयंत्र पूजन में देवता

कर्णिकाओं में

१-ईशानमें-ॐ ईशानायनमः ॥
२-पूर्वमें-ॐ तत्पुरुषायनमः ॥
३-दक्षिण में-ॐ अघोरायनमः ॥
४-पश्चिममें-ॐ वामदेवायनमः॥
५-उत्तरमें-ॐ सद्योजातायनमः ॥
(इति प्रथमावरणपूजाक्रम)
(पञ्चमूर्तिपूजा समाप्त)
६-पुनः-ईशानमें-ॐ निवृत्यैनमः॥
७-पूर्वमें-ॐ यनिष्ठायैनमः ॥
८-दक्षिणमें-ॐ विद्यायैनमः ॥
९-पश्चिममें-ॐ शक्तयैनमः ॥
१०-उत्तरमें-ॐशान्त्यतीतायैनमः॥
इतिद्वितीयावरण में कला पूजा
११-पुनःपूर्व दिशाओं में-पूर्व में-ॐ सूर्यायनमः ॥
१२-आग्नेयमें-ॐ इन्दवेनमः ॥
१३-दक्षिणमें-ॐ शित्यैनमः ॥
१४-नैर्ऋतमें-ॐ तोयायनमः
१५-पश्चिममें-ॐ अग्नयेनमः ॥
१६-वायव्यमें-ॐ पवनायनमः ॥
१७-उत्तरमें-ॐ आकाशायनमः ॥
१८-ईशानमें-ॐयज्वनेनमः

इतिअष्टमूर्ति पूजा समाप्त
(इतितृतीयावरण)

पुनःपूर्वादिक्रम से—

१९-पूर्वमें-ॐ अनन्तायनमः ।
२०-आग्नेयमें-ॐसूक्ष्मायनमः ॥
२१-दक्षिणमें-ॐशिलोत्तमायनमः ।
२२-नैर्ऋतमें-ॐ एकनेत्रायनमः ॥
२३-पश्चिममें-ॐएकरुद्रायनमः ॥
२४-वायव्यमें-ॐ त्रिमूर्तयेनमः ॥
२५-उत्तरमें-ॐ श्रीकण्ठायनमः ॥
२६-ईशानमें-ॐ शिखण्डिनेनमः ॥

इतिचतुर्थावरण में विघ्नेश्वरों की पूजा समाप्त

उत्तरादिक्रम से बाहर—

२७-उत्तर में-ॐ उमायैनमः ॥
२८-ईशानमें-ॐचण्डेश्वरायनमः॥
२९-पूर्वमें-ॐनन्दिनेनमः ॥

३०-आग्नेयमें--ॐ महाकालायनमः।।
३१-दक्षिणमें--ॐ गणेशायनमः ।।
३२-नैऋतमें--ॐ वृषभायनमः ।।
३३-पश्चिममें--ॐ भृङ्गारिष्टयेनमः
३४-वायव्यमें--ॐस्कन्दायनमः ।।

इतिपञ्चमावरण में गणों की पूजा

भूपुर में बाहर--पूर्वादिक्रम से

३५-पूर्वमें--ॐ इन्द्रायनमः ।।
३६-आग्नेयमें--ॐ आग्नयेनमः ।
३७-दक्षिणमें-ॐ यमायनमः ।।
३८-नऋतमें--ॐ निऋतयेनमः ।।
३९-पश्चिममें--ॐ वरुणायनमः :
४०-वायव्ममें--ॐ वायवेनतमः ।।
४१-उत्तरमें--ॐ कुवेरायनमः ।।
४२-ईशानमें--ॐ ईशानायनमः।।
४३-ईशानपूर्वकेमध्ममें--ब्रह्मणे-नमः ।।
४४-निऋतिपश्चिमकेमध्यमें--ॐ अनन्तायनमः ।।

इतिषष्ठआवरण में दिक्पालों की पूजा समाप्त ।

पूर्वादिक्रम से-

४५-पूर्वमें--ॐ वज्रायनमः ।।
४६-आग्नेयमें--ॐ शत्यैनमः ।।
४७-दक्षिणमें--ॐ दण्डायनमः ।।
४८-निऋतिमें--ॐ खड्गायनमः ।।
४९-पश्चिममें--ॐ पाशायनमः ।।
५०-वायव्यमें-ॐअङ्कुशायनमः ।।
५१-उत्तर में--ॐ गदायैनमः ।।
५२-ईशानमें-ॐ त्रिशूलायनमः ।।
५३-ईशानपूर्व के मध्य में--ॐ । पद्मायनमः
५४-निऋति पश्चिम के मध्म में--ॐ चक्रायनमः ।।

संकेत—आवसरण पूजा के पूर्व सभी देवताओं की पीठपूजा करनी चाहिए—

शिवपूजा में—ॐ मण्डूकान्तपरतत्वान्त देवताभ्योनमः ।।

इतिपूर्वोक्त देवताओं का पूजन करके—

आग्नेयादि क्रम से पीठ पूजा करनी चाहिए ।

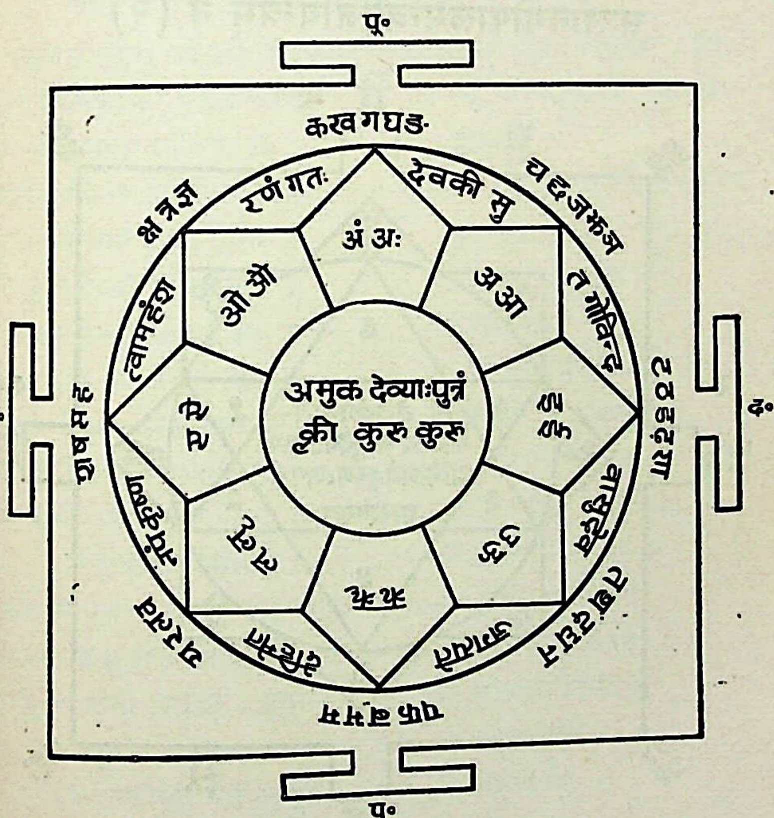
आग्नेय में—ॐ वामायैनमः ॥
दक्षिण में—ॐ ज्येष्ठायैनमः ॥
नैर्ऋत्यकोण में—ॐ रौद्र्यैनमः ॥
पश्चिम में—ॐ काल्यैनमः ॥
वायव्य में—ॐ कलविकरिण्यैनमः ॥
उत्तर में—ॐ वलविकरिण्यैनमः ।
पूर्व में—ॐ सर्वभूतदमन्यैनमः ॥
इसी प्रकार पीठ पूजा करनी चाहिए ।

ओं नमो भगवते सकलगुणात्म शक्ति-
युक्तायानन्ताय-योगपीठात्मनेनमः ।

"ओंनमःशिवाय" इत्यादि प्रधान मंत्र से पूजनादि कार्य करै ।

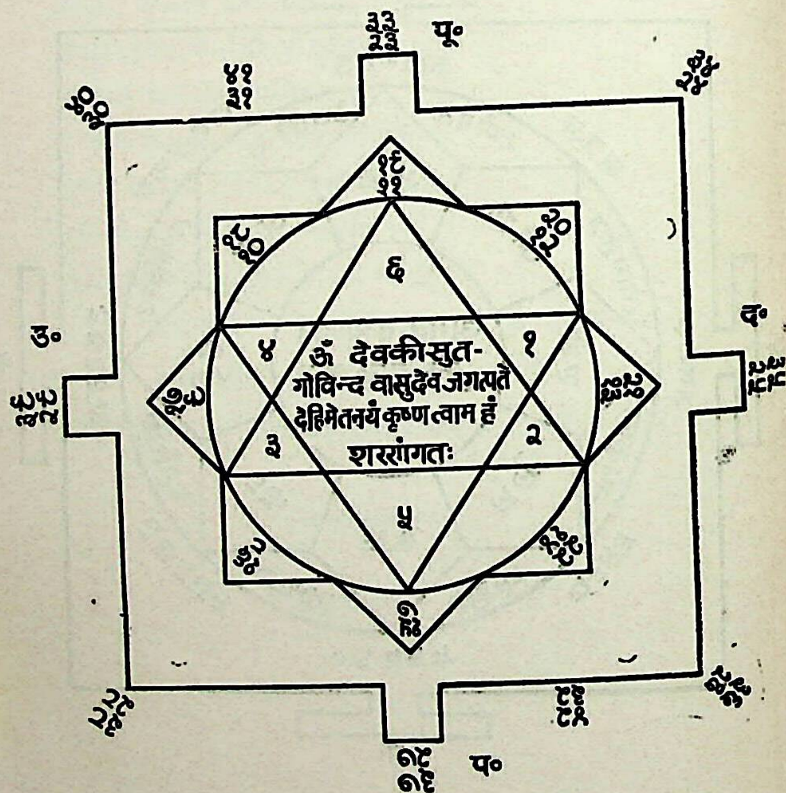


श्री सन्तानकरयन्त्रम् नं (१)



संकेत—इस यंत्र को तांवे की थाली में अनार की कलम से श्वेत चन्दन से लिख कर दैनिक पूजन करने से अवश्य चिरंजीवी पुत्र प्राप्त हो सकता है। यंत्र को भोजपत्र पर अन्य मंत्र वद् धारण करने का भी ध्यान रहना चाहिये—अर्थात् स्त्री के गले में यन्त्र धारण करवाना चाहिये। अनेक वार का परीक्षित यंत्र है निष्फल तो होगा ही नहीं।

सन्तानगोपालमन्त्रपूजायन्त्रम् नं (२)



संकेत—इस यंत्र को भी तावे की थाली में नं० १ यंत्र की तरह लिखकर—आगे लिखे देवताओं का पूजन यंत्र में अङ्कानुसार करने से निःसंदेह चिरायु पुत्र की प्राप्ति होती है। कारीगर द्वारा यंत्र तावे के पत्र पर खुदवाया जा सकता है।

सन्तानगोपाल यन्त्र के देवता आदि का पूजन क्रम

पहिले पीठपूजा करैं--ॐ मण्डूकादि परतत्वान्तपीठदेवताभ्योनमः। इति पीठ देवताओं का पूजन करके--

पूर्व में--ॐविमलायैनमः ॥

आग्नेय में--ॐ उत्कर्षिण्यैनमः ॥

दक्षिण में--ॐ ज्ञानायैनमः ॥

निर्ऋति में--ॐ क्रियायैनमः ॥

पश्चिम में--ॐ योगायैनमः ॥

वायव्य में--ॐ प्रह्वयैनमः ॥

उत्तर में--ॐ सत्यायैनमः ॥

ईशान में--ॐ ईशानायैनमः ॥

मध्य में--ॐ अनुग्रहायैनमः ॥

ये सब पीठदेवता है।

आवरण पूजा का क्रमदेवता सहित प्रत्येक अङ्क में देवताओं का सङ्केत जाना चाहिए। यथा--

षट्कोणों में—

१--ॐ देवकीसुत गोविन्दहृदयायनमः ॥

२--ॐ वासुदेव जगत्पतेशिरसे स्वाहा ॥

३--ॐ देहिमेतनयङ् कृष्ण शिखायैवषट्

४--ॐ त्वामंहृशरणङ्गतःकवचायहुम् ॥

६--ॐ देवकीसुतगोविन्दवासुदेव जगत्पते देहिमें तनयङ् कृष्ण-त्वामहंशरणङ्गतः इति अस्त्रायफट्

५ में कोई देवता नहीं है

अष्टदलों में पूजाक्रम।

७--ॐ रुक्मिण्यैनमः ॥

८--ॐ सत्यभामायैनमः ॥

९--ॐ नाग्नजित्यैनमः ॥

१०--ॐ कालिन्द्यैनमः ॥

११--ॐ मित्रविन्दायैनमः ॥

१२--ॐ लक्ष्मणायैनमः ॥

१३--ॐ जाम्ववत्यैनमः ॥

१४--ॐ सत्यायैनमः ॥

दलाग्रेषु

१५--वासुदेवायनमः ॥

१६--ॐ देवक्यैनमः ॥

१८--ॐ यशोदायैनमः ॥

१९--ॐ बलभद्रायनमः ॥

२०--ॐ सुभद्रायैनमः ॥
२१--ॐ गोपेभ्योनमः ॥
२२--ॐ गोपिकाभ्योनमः ॥

भूरपुर के प्रथम रेखा में

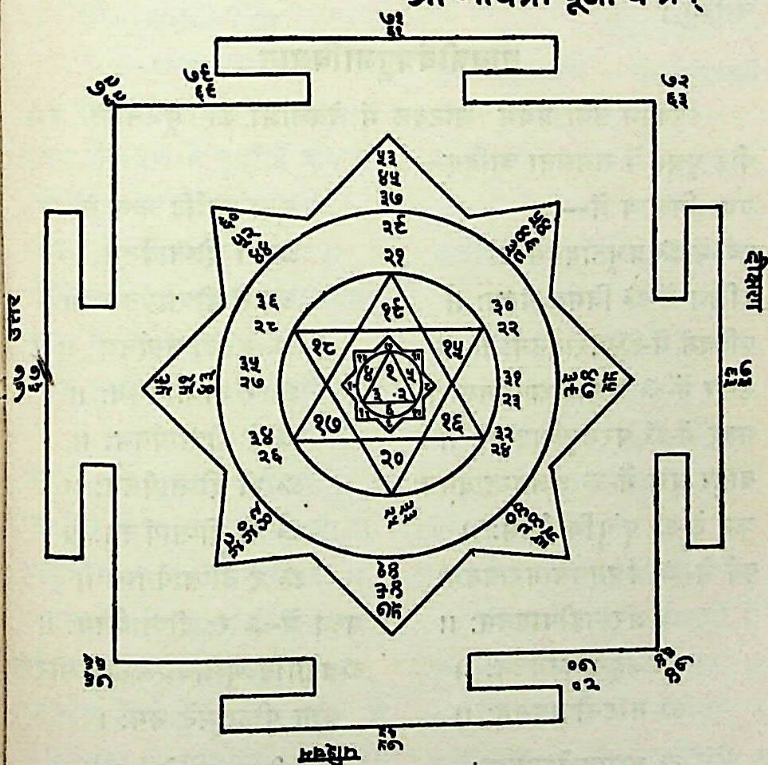
२३--ॐ इन्द्रायनमः ॥
२४--ॐ अग्नयेनमः ॥
२५--ॐ यमायनमः ॥
२६--ॐ निर्ऋतयेनमः ॥
२७--ॐ वरुणायनमः ॥
२८--ॐ वायवेनमः ॥
२९--ॐ कुवेरायनमः ॥
३०--ॐ ईशानायनमः ॥
३१--ॐ व्रह्मणेनमः ॥
३२--ॐ अनन्तायनमः ॥

भूपुरद्वितीय रेखा में ॥

३३--ॐ वज्रायनमः ॥
३४--ॐ शक्तयेनमः ॥
३५--ॐ दण्डायनमः ॥
३६--ॐ खड्गायनमः ॥
३७--ॐ पाशायनमः ॥
३८--ॐ अङ्कुशायनमः ॥
३९--ॐ गदायैनमः ॥
४०--ॐ त्रिशूलायनमः ॥
४१--ॐ पद्मायनमः ॥
४२--ॐ चक्रायनमः ॥

संकेत—यन्त्र में अंक लिखे हैं यहां देवताओं के भी अंक लिखे हैं अंकानुसार देवताओं का पूजनादि क्रम जानना चाहिए। प्रत्येक प्रधान देवता का पूजन यन्त्र के मध्य में होता है।

[क] नेत्रत्रयायवौषट् इसका प्रयोग इस यन्त्र में वहुत लोग नहीं करते हैं अतः अंक ५ वां रिक्त रहेगा।



गायत्री यंत्र पर प्राक्कथन—इस यन्त्र में प्रथम त्रिकोण-त्रिकोण के बाद वृत्त (गोल) वृत्त के बाद (अष्टदल) अष्टदल के बाद, षट्कोण-षट्कोण के बाद—द्वितीय वृत्त (गोल) द्वितीय वृत्त के बाद द्वितीय "अष्टदल" द्वि अष्टदल के बाद "तृतीयवृत्त" तृतीय के बाद

तृतीयवृत्त के बाद-द्वादशदल-द्वादश के वाद भूपुर रेखायें-एक या तीन होनी चाहिए। देवताओं की गणना षट्कोण से जानना चाहिए।

गायत्रीयंत्रपूजाविधान

त्रिकोण तथा प्रथम अष्टदल में देवताओं का पूजनादि कर्म पीठ पूजा में समझना चाहिए—

यथा-त्रिकोण में—

पूर्व में-ॐ प्रभूतायनमः ॥

दक्षिण में-ॐ विमलायनमः ॥

पश्चिम में-ॐसारायनमः ॥

उत्तर में-ॐ समाराध्यायनमः ॥

मध्य में-ॐ परमसुखायनमः ॥

वाहर वृत्त में-ॐ अंअनन्तायनमः

क्रम से-ॐ पृं पृथिव्यैनमः ॥

पूर्व से-ॐ अंअमृतसागरायनमः

ॐ अंरत्नद्वीपायनमः ॥

ॐ अंहेमगिरयेनमः ॥

ॐ नन्दनोपायनमः ॥

ॐ कल्पवृक्षेभ्योनमः

ॐ मणिभूषितभूतकायनमः

ॐ सोममण्डलायनमः ॥

ॐ अग्निमण्डलायनमः ॥

ॐ सूर्यमण्डलायनमः ॥

पुनः पूर्वादि क्रम से—

ॐ रां दीप्तायैनमः

ॐ रीं दीप्तायैनमः ॥

ॐ रुं दीप्तायैनमः ॥

ॐ रें दीप्तायैनमः ॥

ॐ रैं दीप्तायैनमः ॥

ॐ रौं दीप्तायैनमः ॥

ॐ रौं दीप्तायैनमः ॥

ॐ रं दीप्तायैनमः ॥

मध्य में-ॐ रः दीप्तायैनमः ॥

ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय सौराय योग पीठात्मने नमः।

इति पीठ पूजा देवता।

आवरण पूजा देवता ॥

त्रिकोण में—

पूर्वकोण में १-ओंगायत्र्यैनमः ॥

निर्ऋतिकोणमें २-ॐसावित्र्यैनमः

वायुकोणमें ३--ॐसरस्वत्यैनम :।
मध्यं में ४.-ॐब्रह्मणेनमः
५--ॐविष्णेनमः
६--ॐरुद्रायनम.
इति प्रथमावरण देवता ।।
प्रथमं अष्टदल में पूर्वादि क्रम से—
पूर्व में १--ॐ आदित्यायनमः
दक्षिण में २-ॐ भानवेनमः ।।
पश्चिम में ३-ॐ भास्करायनमः
उत्तर में ४-ॐ रवयेनमः ।
प्रथम अष्ट दल में-आग्नेयदिशादि-क्रम से—
आग्नेय में १-ॐ उषायैनमः ।।
निर्ॠति में २-ॐ प्रज्ञायैनमः ।।
वायुकोण में ३-ॐप्रभायैनमः ।।
ईशानकोण में ४-ॐसंध्यायैनमः ।
इति द्वितीयावरण देवता ।।
षट्कोण में देवों के नाम-यहां से अङ्कगणना के अनुसार यंत्र में देवता समझिये-यहां से पीछे लिखे देवता प्रथम त्रिकोण तथा प्रथम अष्टदलों के समझना चाहिए। षट्कोणों में आग्नेयादि दिशा के क्रम से—
१-आग्नेयदिशा में-ॐब्रह्मणे-हृदयायनमः ।।
२-निर्ॠतिकोण में-ॐ विष्णवे शिरसेस्वहा ।।
३-वायुकोण में-ॐ रुद्रापार्श्व-वायैवषट् ।।
४-ईशानकोण में-ॐ ईश्वराय-कवचायहुं ।।
५-पूर्वदिशा में-ॐ सदाशिवाय-नेत्रत्रयायवौषट् ।।
६-पश्चिम में-ॐ सर्वात्मनेनमः अस्त्रायफट् ।।
इति तृतीयावरण देवता ।।
षट्कोण के बाद पूर्वादि क्रम से—अष्ट दलों के अग्र भागों में
७- पूर्व में-ॐप्रह्लादिन्यैनमः ।।
८-अग्निकोण में-ॐप्रभायैनमः ।
९-दक्षिण में-ॐ नित्यायैनमः ।
१०-निर्ॠतिकोण में-ॐ विश्वम्भ-रायैनमः ।।
११-वायुकोण में-ॐप्रभावत्यैनमः
१२-उत्तर में-ॐजयायैनमः ।।

१३-ईशानकोण में-ॐशान्त्यैनमः।
इति चतुर्थावरणदेवता ॥
प्रथम गोल के बाद अष्टदलों में मध्य में
१४-पूर्व में-ॐ कान्त्यैनमः॥
१५-अग्निकोण मैं-ॐ दुर्गायैनमः
१६-दक्षिण में-ॐसरस्वत्यैनमः।
१७-निर्ऋतिकोणमैं-ॐविश्वरूपाय नमः॥
१८-पश्चिममें-ॐविशालायैनम:।
१९-वायुकोण में-ॐ ईशायैनमः॥
२०-उत्तर में-ॐचापिन्यैनमः॥
२१-ईशान में-ॐविमलायैनमः
॥इति पञ्चमावरण देवता॥

श्रीगायशीयन्त्रा के शेष देवताओंका विवेचन

दूसरे वृत्त के बाद दलों में पूर्वादिक क्रम से-अष्टदलमूल में।
२२-पूर्व में-ॐअपहारिण्यैनमः॥
२३-अ०को०में-ॐसूक्ष्मायैनमः॥
२४-द०में-ॐ विश्वयौन्यैनमः॥
२५-नि०को० में-ॐजयावहायै-नमः॥
२६-पश्चिममें-ॐपद्मालयायैनमः॥
२७-वायु०को०मे-ॐ परायैनमः॥
२८-उत्तर में-ॐ शोभायैनमः॥
२९-ईशानमें-ॐ पद्मरूपायैनमः॥
इतिषष्ठावरण देवता॥
द्वादशदलमध्य में क्रमशः पूर्वादि-क्रम से।
३०-पू०में-ॐ ब्राह्मण्यैनमः॥
३१-आ०में-ॐईंमाहेश्वर्य्यैनमः॥
३२-दक्षिणमें-ॐॐकौमार्यैतमः॥
३३-त्रिर्ऋति में-ॐॠंवैष्णव्यैनमः॥
३४-पश्चिममें-ॐ ऌंवाराह्यै नमः॥
३५-वायुकोणमें-ॐऐंइन्द्राण्यैनमः॥
३६-उत्तरमें-ॐओंचामुण्डायैनमः॥
३७-ईसान-ॐओंमहालक्ष्म्यैनमः॥
इतिसप्तमावरणपूजा।
द्वादश, दलों के अग्रभागों में।
पूर्वादिक्रमसे—
३८-पू०-ॐसोंसोमायनमः॥
३९-अ०को०-ॐभौंभौमायनमः॥

४०-द०में-ॐ वुं वुधायनमः ॥
४१-नि०को०-वृं वृहस्पतयेनमः ॥
४२-प०दि०में-ॐशुं शुक्रायनमः ॥
४३-वा०को में- शंशनैश्चराय-नमः ॥
४४-उ०में-ॐ रांराहवेनमः ॥
४५-ईशानमें-ॐकेंकेतवेनमः ॥

"इतिअष्टमावरणपूजा"

भूपुरे पूर्वादिदशदिक्षु-

पू०-ओंइंद्रायनमः ॥
अ० में-ओंअग्नयेनमः ॥
द० में-ओंयमायनमः ॥
निर्ऋतिकोणमें-ओंक्षंनिर्ऋतयेनमः
पश्चिममें-ओंवंवरुणायनमः ॥
वायुकोणमें-ओंवांवायवेनमः ॥
उत्तर में-ओंसोंमायनमः ॥
ईशानमें-ओंईंईशानायनमः ॥
ई०पू० मध्य में-ओंआंब्रह्मणेनमः ॥
नि०प० मध्य में-ओंअं अनन्तायनमः ॥

इतिनवमावरणम्

भूपुर से कुछ ही दूर पूर्वोक्तदशादि-क्पालों के आयुध

पू०-ओंवंवज्रायनमः ॥
अ०-ओंशंशक्तयेनमः ॥
द०-ओं दंडण्डायनमः ॥
नि०-ओंखंखड्गायनमः ॥
प०-ओंपं० पाशायनमः ॥
वा-ओंअं अङ्कुशायनमः ॥
उ०-ओंगंगदायनमः
ई०में-ओंत्रिंत्रिशूलायनमः ॥
पू०ई०म०में-ओंपंपद्मायनमः ॥
नि०प०म०में-ओंचंचक्रायुधाय-नमः ॥

सङ्केत—यह गायत्री यन्त्र भी चन्दन से लिखकर पूजनादि करने से सकल सिद्धि प्रद होता है। कारीगर द्वारा यह भी पूर्वयन्त्रों की तरह सदा के लिए के बनवाया जा सकता है।

यन्त्र में लिखे अङ्कानुसार ही देवताओं का पूजनादि कार्य करना चाहिये।

यन्त्र पूजन विधि

जिस यन्त्र का पूजन करना हो-उस यन्त्र को तांबे के पत्र में बनवा लेना चाहिए यन्त्र तैयार होने पर पूजन करना चाहिए अथवा तांबे की थाली में सफेद या लाल चन्दन से अनार की कलम से यन्त्र लिखकर पूजनादि कार्य करे। प्रत्येक यन्त्र में देवताओं के स्थान अङ्कानुसार जानना चाहिए अर्थात् देवताओं की अङ्कगणना को यन्त्र में मिलान करके आवाहन आदि कार्य करे-जैसे किसी देवता की संख्या १ है तो यन्त्र में जहां १ लिखा होगा वहीं उस देवता का आवाहन-पूजन आदि कार्य करना चाहिये। सङ्ख्यानुसार ही यन्त्र में मिलाकर समस्त कार्य करे। यन्त्रों में आवरण पूजा का विधान लिखा है उसका सर्वसाधारण भाव यह है कि किसी यन्त्र में ३-किसी ४-किसी में ५-किसी में ६-आदि आवरण होते हैं आवरण का स्थान लिखे हुये देवतानुसार अङ्कों से जान लेना चाहिये प्रतियन्त्र में अङ्कों के क्रम से देवताओं के स्थान में स्पष्ट लिखा है कि इति प्रथम आवरण। इसी प्रकार दूसरे आवरण में देवताओं की स्थापना आदि अङ्कानुसार दी गई है। तृतीय-चतुर्थ आदि सभी आवरणों के देवता अङ्कनुसार ही जानना चाहिए।

पूजन के समय स्नान आदि से शुद्ध होकर पूर्व या पश्चिम मुख बैठकर ३ या ४ बार आचमन करे कुछ देर श्वास रोककर सावधान चिन्त से यन्त्र में देवताओं का आवाहन आदि कार्य करे-यदि किसी निमित्त के लिए यन्त्र पूजन कार्य करना है तो सङ्कल्प करने के बाद आवाहन व पूजनादि समस्त कार्य करे। हाथ में चावल लेकर-

आवाहन में-ॐ भूर्भुवःस्वः-यंत्राधिष्ठित देवानावाहयामि-कहकर यंत्रपर चावल छोड़ना चाहिये।

१-पाद्य-यंत्र पर ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्राधिष्ठित देवेभ्यः पाद्यं-समर्पयामि-कह करके जल छोड़ना चाहिये।

२--अर्घ्य--यन्त्र पर पुनः ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठत देवेभ्योऽ-र्घ्यंसमर्पयामि-कहके जल छोड़े।

३-आचमनीय-ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्यः आचमनं-समर्पयामि--यह करके पुनः जल छोड़े।

४--स्नान--ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवान् स्नापयामि-कह के स्नान करावें।

[क] पञ्चामृतस्नान--शुद्ध स्नान--ॐ भूर्भुवः स्वः-पञ्चामृ-स्नानंसमर्पयामि--पञ्चामृत स्नान करावें।

[ख] उसी प्रकार कहकर के शुद्ध स्नान करावे।

५--वस्त्र--ॐ भुर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्यो वस्त्रं समर्पयामि इससे वस्त्र समर्पण करे।

[क] उपवस्त्र--ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्राधिष्ठित देवेभ्य उपवस्त्रं समर्पयामि--कहके उपवस्त्र [रूमाल-अगौछा आदि]अर्पण करें।

[ख] यज्ञोपवीत-में भी ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्यो यज्ञोपवीतं समर्पयामि--यज्ञोपवीत अर्पण करे।

[ग] आचमन--ॐ भूर्भुवः स्वः--यज्ञोपवीतान्ते यन्त्राधिष्ठित देवेभ्य आचमनं समर्पयामि जल छोड़ दे।

६--आभूषण-ॐभूभुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्य आभूषणं समर्पयामि आभूषण समर्पण करे।

७--गन्ध--[रोली-चन्दन आदि] ॐ भुर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्योगन्धे समर्पयामि।

अक्षत [चावल]--ॐ भूर्भुवः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्योऽक्षतं समर्पयामि [चावल अर्पण करे]

८--पुष्प पुष्पमाला--ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्य-पुष्पाणि पुष्पमालाञ्च समर्पयामि। [पुष्प-पुष्पमाला]

९--धूप-ॐ भूर्भुवः स्वः धूपमाघ्रपयामि [धूप]

१०--दीप--ॐ भूर्भुवः स्वः यन्त्राधिष्ठित देवेभ्यो दीपं समर्पयामि [दीप]

११--नैवेद्य--(भोजन का सामान) ॐ भूर्भुवः यंत्राधिष्ठित-देवेभ्योनैवेद्यंसमर्पयामि [नैवेद्य]।

१२--नैवेद्यान्ते जल--ॐ भूर्भुवःस्वः यंत्राधिष्ठित देवोभ्यो नैवेद्यान्ते जलंसमर्पयायि [जल]।

१३--ताम्वूल [पान]--ॐ भुर्भुवःस्वः यंत्राधिष्ठित देवेभ्योताम्वूलं-समर्पयामि [ताम्वूल]।

[क] फल--ॐ भूर्भूवःस्वः यंत्राधिष्ठित देवेभ्यः फलंसमर्पयामि [फल]

१४--आर्तिक्य--[आरती] आरती करे। आरती के बाद परिक्रमा करे।

१५—पुष्पाञ्जलि-हाथ में पुष्प लेकर यन्त्र पर छोड़ें ।

१६—नमस्कार करे-स्तोत्र का पाठ करे-ध्यान करे । जप करे ।

सङ्केत—यह पूजन का क्रम सर्वसाधारण जन के लिए संक्षेप से लिखा गया है-यदि इतना न कर सके तो जितना कर सकें उतना ही पूर्ण फलद होगा । विद्वज्जन भी जितना भी विस्तार क्रम से पूजनादि करें वह उनकी इच्छा पर है । शास्त्रोंमें अनेक मत से अनेक विधान हैं । इति संक्षेप से पूजन विधि समाप्त ।

"सावरमन्त्रों पर परामर्श"

जबकि भगवान् महाशिव भूतनाथ जी ने समस्त मन्त्रादिकों को कील दिया था उस समय केवल सावर ही मन्त्र विना कीले रह गये थे। कीलित तथा शापित मन्त्रादिकों का जब तक उद्धार (उत्कीलन-शापोद्धार आदि) नहीं होता है तब तक उनका जपादि करने से कोई भी लाभ नहीं होता है। सावर मन्त्रादि (मन्त्र तथा यन्त्र) तो तत्काल केवल जप मात्र से ही विलक्षण फल प्रकट करते हैं। कलियुग में विशेष विधान आदि करने की शक्ति तथा समय न होने के कारण आशुतोष कृपालु भगवान् शङ्कर जी ने जगज्जननी भगवती पार्वती जी की प्रेरणा से सावर मन्त्रादि को प्रकट करके संसार का विशेष उपकार किया।

कलिविलोक जगहितहरगिरिजा।
सावर मन्त्रजाल जिनसिरिजा॥
अनमिल आखरअरथनजापू।
प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू॥

इति गोस्वामी जी के वाक्य हैं।

सावर मन्त्रों को शुद्ध करने की आवश्यकता नहीं तथा अर्थ का अन्वेषण भी नहीं करना चाहिये। ये जैसे मन्त्र हों वैसे ही जप करने से तत्काल फल प्रकट करते हैं।

विशेष-सावर मन्त्र को केवल ग्रहण समय में, या दीपावली में, या होली के दिन में या देवोत्थानी एकादशी में (११०० अर्थात्

११ माला जप करने से तथा दशांश हवन अर्थात् केवल १०८ आहुतियाँ देने से मन्त्र पूर्ण काम करने लगता है। यद्यपि बहुत ग्रन्थों में तथा स्वानुभूति महर्षियों के मत से केवल १०८ वार जपने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर भी कुछ मतों में ११०० वार जपने का भी विधान है। मन्त्र सिद्ध होने में सन्देह नहीं है।

कुछ आचार्यों ने अपने २ अभीष्ट देवानुसार भी सावर मन्त्र तुल्य मन्त्र वनाये हैं। उनका पता लगाना अति कठिन है कुछ भी हो काम सभी मन्त्रों से सफल होता है। बङ्गाल, आसाम में (कामरूप देश में) भगवती कामाक्षा देवी की महिमा का विशेष वर्णन है। वहाँ प्राय: सभी मन्त्र सावर ही शीघ्र सिद्धि प्रद होने वाले मिलते हैं।

पहाड़ी प्रदेशों में कामाख्या मन्त्रों की सिद्धि प्राप्त किए हुए साधु, फकीर एवं योगी-योगिनी अब भी हैं जो मन्त्र बल से असम्भव को सम्भव कर दिखाते हैं। कामरूप देश में नारियाँ अब भी यात्रियों को सम्मोहित कर लेती हैं प्राय: उनके पास सावर मन्त्र ही हैं। इस विषय में विशेष में न लिख कर इतना ही लिखना पर्याप्त है कि आगे विशेष काम में आने योग्य सावर मन्त्र लिखे जायेंगे उनके द्वारा अवश्य कार्य सफल करना चाहिए। मन्त्र शक्ति प्राप्त होने पर जन कल्याण में लगावें तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा।

१—सम्पूर्ण सिद्ध प्रद मन्त्र

ॐ हर त्रिपुर हर भवानीवाला राजा प्रजा मोहिनी सर्व शत्रु-विध्वँसिनी मम चिन्तितं फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

२–बालक आदि की भूतादि समस्त पीड़ा नाशक मन्त्र

सत नाम आदेश गुरु का आदेश पवन पानो का नाद अनाहद दुन्दुभी वाजे, जहाँ बैठी योग माया साजै चौसठ जोगिनी बावन बीर बालक की हरै सब पीरा आठौं जाति शीतला जानिये बन्ध बन्ध वारे जात मसान भूत बन्ध प्रेत वन्ध छल बन्ध छिद्र वन्ध सबको मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरु का ।

(संकेत–२१ बार झाड़ा देने से सब बाधा दूर होगी ।)

३–भूतनाशक मन्त्र

ॐ नमो काली कपाली दहि दहि स्वाहा ।

(संकेत–इस मन्त्र से पढ़कर प्रेतावेश व्यक्ति पर जल छिड़कने से प्रेत जलने लगेगा चिल्लाकर भाग जायगा ।)

४–उदर आदि शूल नाशक मन्त्र

ॐ कालि कालि महा कालि नमोस्तुते हन हन दह शूलं त्रिसूलेन हुं फट स्वाहा ।

(संकेत–पढ़कर पानी पिलाना चाहिए ।)

५–बालक की नजर आदि दूर करने का, चौंकने का मन्त्र

ॐ डायन मोर जादू वान । चौंक उठे बालक के प्रान ।
रोये बालक फुक्का फाड़ । चीखे मार करे चीत्कार ॥

दोहाई कामक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन। काट दे मन्त्र से जादू का बान। ॐ नमः रुद्राय। ॐ नमः कामाक्षादैब्ये ह्लीं क्रीं श्री फट् स्वाहा।

संकेत–बढ़नी की सींक से झाड़ना चाहिये–झाड़ने के बाद सींक को अग्नि में बिल्कुल जला देना चाहिये।

६–कर्ण मूल पर मन्त्र

ॐ वनाय गढ़ बनरी तौ हनुमान झटै, कंठाविलारी बांधि थनैली कर्णमूल सब जाय रामचन्द्र का बचन पानी पथ हो जाय।

संकेत–राख को पढ़कर लगा देना चाहिए।

७–दांत पीड़ा नाशक मन्त्र

ॐ अग्नि बाँधौ अनीश्वर बाँधौ सौलाख बिकराल चांधौ। सौ लोहा लोहा २ बांधौ। बज के निहाय वच धन दाँत पिराय तो महादेव की आन।

संकेत–तर्जनी अंगुली पीड़ा युक्त दाँत में लगाकर मन्त्र पढ़ै।

८–बिच्छू के विष चढ़ाने का मन्त्र

टूटे खाट पुराने बान चढ़ जा विच्छू सिर के तान।

संकेत–जहां विच्छू ने काटा हो, पूवोक्त मन्त्र पढ़ कर ऊपर की तरफ हाथ फेरकर पढ़ना चाहिए विच्छू विष चढ़ जायगा।

९–बिच्छू विष उतारने का मन्त्र

सुरही कारी गाय गाय की चिमरी पूछी ते करे गोबरे वाछी वियाय बीछे तोरे कइ लाति गौरा वर्ण अठारह जाति छा कारी छा

परी परी छा भूमाधारी छा रत्न पवारी छा छा कुं हुं छारि उतरु छी हाड़ हाड़ पोर पोरते कस मारे नील कण्ठ गर मारै । महादेव की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शडार वन छाइ उतरहि वीछी आज्ञा हनुमन्त की ।

१०—बिच्छू विष उतारने का मन्त्र

२०-१९-१८-१७-१६-१५-१४-१३-१२-११-१०-९-८-७-६-५-४ ३-२-१ अर्थात् बीस अंक से १ अंक तक उल्टी गिनती पढ़कर 'उतर जा विच्छूडंक से हनुमान आये लङ्क से' इस मन्त्र को पढ़कर पूछना चाहिए कि कहां पीड़ा होती है क्रम से विच्छू उतर जायेगा।

११—बिच्छू का विष उतारने का मन्त्र

काला विच्छू काँतरवाला हरीसींक सोने पनवारा उतर विच्छू डङ्क से हनुमान आये लंक से ।

[संकेत—नं० १० की तरह क्रिया करने से विच्छू विष उतर जायेगा ।]

१२—आई हुई आँख का मन्त्र

ॐ वने विआई वानरी जय जय हनुमन्त आँख पीडाकपावारी गिंहिया थनै लाई चारिउ जाय भरमत गुरू की शक्ति फुरो मंत्रईश्वरोवाचा ।

[संकेत-आँखों पर मन्त्र पढ़कर हाथ फेरना चाहिए ।]

१३–बर्र के काटने का मन्त्र (पीड़ा शान्ति के लिए)

अनाततैया मानततैया कोदन की कुदई, उतर उतररीततैया हनूमान ने कही।

सङ्केत–बिच्छू की तरह पढ़कर झाड़ना चाहिये-काटे स्थान पर लोहा लगाना चाहिये।

१४–बिच्छू व ततैया दूर करने का मन्त्र

बिच्छु ततैया का विष दूर हो आराम भरपूर हो-हनूमान की लगे दुहाई विष को खाय कालिका माई।

सङ्केत पूर्ववत् क्रिया करें।

१५– सर्प विष दूर करने का मन्त्र

चल चल चांटा, तड़ातड़।
धस जाय फट जाय विष धड़ाधड़॥
रुके न चाल रूप धर कराल।
मार मार धसा दे पाताल॥
चोट पड़े जहां जहां विष न रहे लेश
आज्ञा कामाक्षा की मनसा का आदेश॥
दोहाई भोलानाथ की दोहाई विष हरी की॥

तेज करदे चांटा की चाल। तड़तड़ तड़ातड़ धड़ धड़ धड़ाधड़ काँप उठे त्रिभुवन के व्याल। कीं कीं हीं हीं फट स्वाहा।

सङ्केत-एक मनुष्य चांट मारता रहें धीरे २। दूसरा मनुष्य कान में मन्त्र जोर जोर से पढ़ते रहना चाहिए।

१६-सांप विष झारने का मन्त्र

कोड़ा कोड़ा अगौंछे का कोड़ा। चल चल तेज चाल जैसे चले घोड़ा। नाल बोले खटाखट। कोड़ा बोले फटाफट। जहां जहां चोट पड़े विष बिलाय फूट पर।

दुहाई कामाक्षा माई की मार मार कोड़ा मार।
दुहाई मनसा देवी की अंग अंग विष फार॥
दुहाई विषहरी की तुम्हें शंकर जी की आन
झार दे विष वचें भक्त के प्रान॥

सङ्केत-यह मन्त्र कपड़े का कोड़ा बनाकर झारने का है।

१७-सर्प के काटे हुये कानो में कहने का मन्त्र

विष नाहीं विष नाहीं, मनसा रखवार, विषहरी ले गई विष सागर के पार। कामाक्षा की आज्ञा है रहो होशियार, चाट गये शंकर विन हो गया उद्धार।

ओं नमः रुद्राय क्रां क्रां क्रां कू (दाहिने कान में)

ओं नमः कामाक्षा देव्यै क्रीं क्रीं क्रीं कू (बायें काम में)

१८-विष बन्धन का मम्त्र

जय शिव जय कामाक्षा माई, तीन भुवन में फिरे दुहाई।
मानस नाम जगत में शोर, सत्य नाम की वांधी डोर।

विष विष विष धस गया विष । रे विष रे आगे जो बढ़े ।
अस्सी कुण्ड नरक में पड़े ।
दुहाई विषहरी की । ओं नम. नील कण्ठाय ह्रीं फट् स्वाहा ।
संङ्केत–यह मन्त्र पढ़कर डोरे से काटे स्थान से उपर बांध देवे ।

१९–साप के काटे का सन्देश देने वाले को थप्पड़ मार बेहोस होने पर झारने का मन्त्र

साधारण थप्पड़ मारना चाहिए ।

मन्त्र–जय कामाख्या जय हनुमान्, मारो मारो थप्पड़ तान ।
मारो थप्पड़ खींच रिसाय, चोट पड़े विष नीचे जाय ।
कामाक्षा की पड़े दुहाई, आज्ञा देने मनसा माई ।
दुहाई विष हरी की । ओं ह्रीं क्रीं फट् स्वाहा ।

(संकेत–संवाददाता के थप्पड़ मारने के वाद उसको झाड़कर मनुष्य को जाकर झाड़ना चाहिए।)

२०–सांप विष झारने का मन्त्र

उत्तर दिशि कारी वादरि–तेहि मध्य ठाड़ काला पुरुष एक हाथ चक्र एक हाथ गदा चक्र मारो शतखंड जाय । गदा मारो सातों पाताल जाय ॐ हर हर शिवासा ।

२१–मन्त्र ज्वर दूर करने का

ओं नमो अजैपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तौ महादेव की दुहाई फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ।

(संकेत–६ बार झारने से ज्वर उतर जायगा ।)

२२–तिजारी चौथिया ज्वर दूर करने का मन्त्र

कारी कुकरी सात पिल्ला व्याई सातो दूध पिआई जिआई वाघ थन इलोफाञ्च लाये के मन्त्र तीनो जाई।

संकेत–इस मन्त्र से झारना चाहिये।

२३–अग्निस्तम्भन मंत्र

असान वांधो वांधौ घोरा घाट आठ कोटि वैसन्दर वांधो अस्त हमारा भाइ। आनहि देखे झझके मोहि देखि वुझाइ हनुमन्त वांधौ पानी होई जाई जाई अग्नि भवेवके भवें जस मत्ती हाथी होइ वैसन्दर वांधौ नारायण सांखि मोरी की शक्ति फुरो मं ईश्वरोवाच

२४–अग्निस्तम्भन का दूसरा मंत्र

अग्नि वांधो वाहन वांधो कुल्पाहा वांधो वांधौ वीच की वायु चरिह खुटै वैसन्दर वाँधौ आतसमेश भाव अवर देखे उमगे हँमहि देखे शीतल होइ जाइ अग्निगलिगण्डें लकड़ो वांधौ वहिन वांधौ शाल हाथ जरै नजिह्व जेर हनुमन्त बीर की आशा फुरे दखि वायु वीर हनुमन्त तेरी शक्ति गुरु की भक्ति ए फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

[संकेत–नं० २३, २४ मन्त्र को पढ़कर–७ कंकड़ अग्नि में पढ़ कर छोड़ने–अग्नि शान्त हो जायगी इन दो में–कोई एक मन्त्र पढ़ना चाहिये।]

२५–भूत-प्रेत व्रम्ह आदि दूर करने का मन्त्र

ओं वज्रवीर हनुमन्त वेगीचल लोहें गदा वज्र का सोंटा तेल सेन्दुर का पुजारी कील मसान कील भूत कील पिशाच कील वीडिला

वादेला कील वारह जाति वांगला कील कील खंख टकाय हुँ हुंकार फट् स्वाहा

(संकेत–इस मन्त्र से झार देने से प्रेतादि पीड़ा दूर होती है।

२६–मोहन मन्त्र

ओं नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि मिलि ठः ठः (उ० तं)

२७–मृगी (मिरगी) दूर करने का मन्त्र

ओं हल हल सणतभुण्डिका पुड़िया श्री राम फूंकै मृगी वायु सूखै ओं ठः ठः स्वाहा।

संकेत–इस मन्त्र को भोज पत्र पर लाल चन्दन से लिखकर गले में वाधने से मृगी रोग दूर होता है।)

नियम-सावर के प्रत्येक मन्त्र को एक ही श्वास में पढ़ना चाहिये।

२८—समस्त सङ्कटों में आने वाला अनभूत प्रयोग अनेकों बार का। भगवान् शङ्कर जी की डमरू की नाद से निकले हुए १४ सूत्र एक श्वास में पढ़ कर झाड़ा देने से सभी पीड़ाये दूर होती हैं–

(क) विच्छु विष में–पढ़ते जाइये उतरता जायेगा।

(ख) सर्प विष में–पढ़ने से अर्थात् कान में जोर २ से मन्त्र कहना चाहिये (१४ सूत्रों का एक मन्त्र माना गया है) विशेष लाभ प्रद है।

(ग) ज्वर-तिजारी आदि में पढ़कर झाड़ दीजिये तथा पीपल के पत्ते पर १४ सूत्र अनार की कलम से लालचन्दन से लिखकर गले या हाथ में बांधने से सभी ज्वर दूर होंगे।

(घ) समस्त पीड़ायें झाड़ा देने से दूर होंगी।

(ङ) परदेश में भगे हुए को वुलाने के लिए पीपल के पत्र पर पूर्ववत् १४ सूत्र लिखकर तथा भगे हुये व्यक्ति का नाम लिखकर कुम्हार के यहां से कोरी भड़िया मयढक्कन की लाकर उसमें वह लिखा हुआ पत्र डाल देना चाहिए, और सात कांकड़ नदी के डाल कर हांडी का मुख वन्द कर देना चाहिये—दैनिक १३ वार हिलाना चाहिए—निश्चय भगा हुआ आ जायगा।

नोट—विस्तार अधिक हो जाने के कारण विशेष न लिख कर इतनी प्रार्थना अवश्य है कि ये १४ सूत्र जो नीचे लिखे जायेंगे वे जनता के सभी काम में आने योग्य हैं। पूज्य गुरु देव जी को इन १४ सूत्रों द्वारा अनेक संकट दूर करते हुए अनेकों वार देखा।

(१४ सूत्र शिव की डमरू से प्राप्त)

१—अइउण् २—ऋलृक् ३—एओङ् ४—ऐऔच् ५—हयवरट् ६—लण् ७—ञमङणनम् ८—झभञ् ९—धढधष् १०—जवगडदश् ११—खफछठथचटतव् १२—कपय् १३—शषर् १४—हल्। (सिद्धान्त कौमुदी)

संकेत—इन १४ सूत्रों को एक श्वास में कहने का अभ्यास कर लेना चाहिये।

प्रेतवाधा में पढ़कर जल की छींटे (वूंदें) डालने से तत्काल लाभ होगा।

श्रीमान् पण्डित श्री शिवदत्त त्रिपाठी शास्त्री जी की रचित अनुवादित व संशोधित पुस्तकों की सूची नीचे लिखी है।

१—श्रीदेवीस्तोत्रम्	भाषा टीका सहितम्
२—श्रीगुरुस्तोत्रम्	,, ,, ,,
३—श्रीरामस्तोत्रम्	,, ,, ,,
४—श्रीशिवस्तोत्रम्	,, ,, ,,
५—श्रीहनुमत्स्तोत्रम्	,, ,, ,,
६—श्रीकामदस्तोत्रम्	,, ,, ,,
७—यन्त्रतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
८—मन्त्रतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
९—सावरमन्त्रतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
१०—वेदान्ततत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
११—जीवनतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
१२—श्रीगायत्रीतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
१३—श्रीवैयाकरणभूषणसारतत्वविवेचनम्	,, ,, ,,
१४—श्रीशिवसूत्ररस्यम्	,, ,, ,,
१५—श्रीनारायणशकुनावली	,, ,, ,,
१६—हरिवंशपुराणश्रवणविधि:	,, ,, ,,
१७—शक्तिपीठनिर्णय:	,, ,, ,,
१८—तन्त्रदुर्गासप्तशती	,, ,, ,,
१९—नवार्णमन्त्रार्थसङ्केत:	,, ,, ,,
२०—गायत्रीतत्वविमर्श	,, ,, ,,

मुद्रक:—एलोरा प्रिंटर्स, सूटरगंज, कानपुर-१ (फोन ४०५२७)